माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

v v v

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन **(98874-09303)**

v v v

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

v v v

सह-संपादक डॉ. महेश चन्द*
नित्या शुक्ला*
मधु गुप्ता*
दीपक आजाद*
नीरा जैन*

v v v

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*

v v v

ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) रमन सैनी* **9717039404**

v v v

संवाददाता ईशा चौधरी*
दीपक कृष्ण नंदन*
श्री राम शर्मा*
विनोद चौधरी*

v v v

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

v v v

बिजनेस हैड अनुराग सोनी* **9828198745**

v v v

मार्केटिंग सलाहकार राजेन्द्र कुमार शर्मा*
अनिल शर्मा*

v v v

मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव रिंकी सैनी*
अजय शर्मा **(8368443640)**

v v v

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

v v v

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

v v v

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

v v v

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :

mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

काम ऐसा करना कि जनता दोबारा मौका दे

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

पत्रिका की जीवन रेखा पाठक होते हैं, दिन-प्रतिदिन यह संख्या बढ़ रही है, आपका साथ व सहयोग हमें निरंतर मिल रहा है, नववर्ष पर आप अभी पाठकों को प्रणाम संग अनन्त शुभकामनाएं...

प्रदेशों की सत्ता में परिवर्तन हुआ है, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ तीनों राज्यों में जहाँ भाजपा की विदाई हुई वहीं कांग्रेस की शहनाई बजी है,

राजस्थान में इतिहास फिर से दोहराया गया है, भारतीय जनता पार्टी पांच साल बाद फिर से राजस्थान की सत्ता से बाहर हुई और कांग्रेस फिर सत्ता में आई, मतलब साफ है जनता कुछ भी कर सकती है, अशोक गहलोत सरकार को जनता के हित समझकर जन प्रिय फैसले लेने होंगे, जिस तरह पांच वर्ष बाद वसुन्धरा राजे सरकार का जनता ने हिसाब लिया आपका भी लिया जाएगा, वर्तमान आपका है, भविष्य भी आपको ही गढ़ना है, सब चीज आईने की तरह साफ है, बशर्ते नजरें पर्दा न करें, सत्ता पक्ष को राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ की जीत मुबारक, वहीं विपक्ष भी तैयार रहे क्योंकि अब आगामी लोकसभा चुनाव-2019 में उत्तर भारत तय करेगा लोकतंत्र का भविष्य...

शेष फिर.....

एक नजर यहां भी

स्वागत-2019
नव वर्ष-नव रंग-नव उमंग लिए आता है... **रंजू जायसवाल** 5

जनमत
पांच राज्यों के चुनाव परिणाम क्या कहना चाहती है जनता? **अजय दिवाकर** 6

जन-संदेश
नई सरकार से जनता की उम्मीदें **माही संदेश टीम** 8

राष्ट्र-संदेश
'राष्ट्रवाद' का भुवन हारना नहीं चाहिए **दीपक आजाद** 10

सेना संदेश
भारतीय सेना दिवस 15 जनवरी **नित्या शुक्ला** 11

ज्वलंत प्रश्न
मोमबत्ती की ऊष्मा वहां तक क्यों नहीं पहुंचती? **पंकज चतुर्वेदी** 12

जय जवान
सबसे पहले है कर्त्तव्य-राजेश सोनी **रोहित कृष्ण नंदन** 16

मन की बात
पापा की खुशबू लौट कर आयी **नवीन जैन** 18

मेरी रसोई 19

मेरा बचपन
अनमोल होता है बचपन **ताना एस. पाटील** 20

पुस्तक समीक्षा 21

उपन्यास
उड़ती चील का अण्डा **डॉ. मदन लाल शर्मा** 22

गतिविधियां
जयपुर के युवाओं ने मिलकर बनाया एलबम... 23

काव्य कलम 24

जीवन संदेश
युवा कलाकारों के लिए प्रेरणा हैं दीपाली शर्मा 25

सिनेमा संदेश
'मैं तो हर मोड़ पर तुझको दूंगा सदा'.... **शिशिर कृष्ण शर्मा** 27

आवरण चित्र- उमेश गोगना*

उमेश प्रख्यात फोटोग्राफर हैं, यात्रा, परिदृश्य और प्रकृति की फोटोग्राफी इनका जुनून है। वर्तमान में ये विभिन्न ब्रांड के एंबेसडर और सोनी अल्फा के मेंटर हैं।

वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु

युवा सम्राट स्वामी विवेकानन्द की जयंती पर युवा शक्ति का आह्वान

अनुराग सोनी
बिजनेस हैड
माही संदेश,
राष्ट्रीय पत्रिका

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'

अर्थात् उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक कि अपने लक्ष्य तक न पहुंच जाओ।

युवा का उल्टा होता है 'वायु'- अर्थात् जो वायु के वेग से चल सके, जिसके मन में उत्साह हो, उमंग हो, जो जीवन का कोई लक्ष्य निर्धारण किया हो और लक्ष्य प्राप्ति के लिये दृढ़ संकल्प हो वह युवा है, युवा वर्तमान है, जो खुद को बेहतर बनाने के लिये जो सोचता और करता है वह युवा है, आंखों में उम्मीद के सपने, नयी उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने का जज्बा और दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का साहस रखने वाला युवा है।

युवा सम्राट स्वामी विवेकानन्द ने कहा है - युवा वह है जो जोश से भरा हुआ है, जो सदैव क्रियाशील रहता है, जिसमें शेर जैसा आत्मत्व है, जिसकी दृष्टि सदा लक्ष्य पर होती है, जिसकी शिराओं में गर्म रक्त बहता है, जो विश्व में कुछ अनूठा करना चाहता है, जो भाग्य पर नहीं कर्म पर विश्वास रखता है, जो परिस्थितियों का दास नहीं उसका निर्माता, नियंत्रणकर्त्ता और स्वामी है। उम्र का यही वह दौर है जब न केवल उस युवा के बल्कि उसके राष्ट्र का भविष्य तय किया जा सकता है।

....शेष पृष्ठ 7 पर

नववर्ष नव रंग नव उमंग लिए आता है

नव जोश, नव प्रण, नव संचार किए जाता है

रंजू जायसवाल
दिल्ली

हम सभी को नए साल का इंतजार है, हो भी क्यों न ,नए वादे जो करने हैं, जीवन को एक नई दिशा, एक नई ऊर्जा देने की तैयारी जो चल रही है।

तो चलिए अपने सभी वादों में एक वादा और सम्मिलित करते हैं, संवेदना का, मानवीयता का, नैतिकता का,, जो जाने कहां खो गई है हमारे ही अंदर कहीं। थोड़ा धैर्य का पाठ पढ़ते हैं, फिर से मानव बनते हैं।

हमारी मानसिकता कितनी संकुचित, और संवेदना कितनी निष्प्राण हो गई हैं, वो इसी बात से पता चलता है जब हमें फर्क पड़ता कोई तकलीफ़ में हो तो, नहीं फर्क पड़ता कोई मदद की गुहार लगाए तो,नहीं फर्क पड़ता कोई दिन रात सामने रोए जाए तो।

हमारी संवेदनहीनता का तब पता चलता है जब रोड़ पर हम अपनी निर्जीव गाड़ी को,सजीव इंसान से ज्यादा तवज्जो देने लगते हैं, कोई दुर्घटना हो जाए तो पीड़ित को असहाय छोड़ भाग जाते हैं,मदद का हाथ आगे नहीं बढ़ाते ।

हैं न हम इंसान, तो फिर क्यों अपनी संवेदना खत्म कर दी, क्यों उसे हृदय की किसी कोठरी में सुला रखा है, जगाइए उसे, कोई उदास है तो ज़रा हंसाइए उसे, कोई मदद के लिए पुकारे तो हाथ आगे बढ़ाइए, किसी मनचले को सबक सिखाइए।

कोई मनचला किसी लड़की को छेड़ रहा होता है तो हम मुंह फेर चल देते हैं अपनी राह,तब ये खून उबाल नहीं मारता, ये घटना बताती हैं हम कितने विवेकहीन हो चुके हैं।

पता चलता है हमारी सिकुड़ती जीवन शैली का जब हमें अपने पड़ोसी से बात किए भी कितना समय बीत जाता है, नहीं पता चलता हमारे पड़ोसी स्वस्थ हैं अथवा बीमार हैं।

कितनी सिमट सी गई है न हमारी दुनिया, न लबों पर हंसी है,न दिल में सुकून है, हां एक व्यर्थ की आपाधापी जरूर चलती रहती है,जिसका कोई मतलब नहीं। इतना व्यस्त किस चीज़ में हैं हम, जो न अपनी खबर ,न दुनियां की। क्यों नहीं फर्क पड़ता ,क्या अब हम इंसान नहीं?

हैं न हम इंसान, तो फिर क्यों अपनी संवेदना खत्म कर दी, क्यों उसे हृदय की किसी कोठरी में सुला रखा है, जगाइए उसे, कोई उदास है तो ज़रा हंसाइए उसे, कोई मदद के लिए पुकारे तो हाथ आगे बढ़ाइए, किसी मनचले को सबक सिखाइए, फिर देखिए ये अंत:करण कितना प्रफुल्लित होता है, कितनी संतुष्टि मिलती है। बाहर बहुत ठिठुरन है अपनी उतरन किसी गरीब को दे आते हैं, बदले में खूब सारा आशीर्वाद ले आते हैं, आज फोन को किनारे रख,घर के बुजुर्गों से दो चार बातें करते हैं,उनकी पोपली हंसी में थोड़ा खुश होते हैं।

चलो नए वर्ष में धैर्य धारण करते हैं, खुद में संवेदना का संचार करते हैं, और मानवता को जीवन प्रदान करते हैं।

पांच राज्यों के चुनाव परिणाम

क्या कहना चाहती है जनता?

उत्तर भारत तय करेगा लोकतंत्र का भविष्य

लोकसभा चुनाव 2019

अजय दिवाकर
सामाजिक-राजनैतिक शोधकर्ता व विश्लेषक

लोकतंत्र की प्रशंसा में भले यह कहा जाता हो कि यह जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन की पद्धति है। परन्तु हकीकत कुछ अलग है। कम से कम लोकतंत्र की प्रतिनिधिमूलक शासन व्यवस्था में इस प्रकार की आदर्श स्थिति जनता के लिए बिल्कुल नहीं होती और यह विडम्बना है कि हमारे राजनीतिक दलों तक अपने मन की बात पहुंचाने के लिए लोकतंत्र की मालिक कही जाने वाली जनता को चुनावों का इंतजार करना पड़ता है। जबकि प्रसिद्ध समाजवादी विचारक राममनोहर लोहिया ने एक बार कहा था कि जिंदा कौमें पांच साल इंतजार नहीं करती। फिर भी हमारा राजनीतिक नेतृत्व इन चुनाव परिणामों में निहित जनता के सन्देश को समझ ही लेगा, इसकी भी कोई गारण्टी नहीं। अत: राजनीतिक शास्त्र के विद्वान काफी लंबे समय से एक ऐसे तन्त्र की खोज में है जो जनता की आवाज को मंच दे और अब तक चले आ रहे नेताओं द्वारा किये जाने वाले एकतरफा संवाद की जगह हमारे राजनैतिक दलों और जनता दोनों में परस्पर संवाद स्थापित किया जा सके। फौरी तौर पर राइट टू रिकॉल और नोटा जैसे कुछ उपचार खोजे भी गए। लेकिन यह दोनों वास्तविक समाधान से अभी भी बहुत दूर हैं व नोटा के अनुत्पादक स्वरुप ने तो इसे देश के बुद्धिजीवियों के निशाने पर ला दिया है।

इन चुनाव परिणामों के संदर्भ में मैंने यहां हमारे राजनैतिक दलों और जनता के बीच संवाद की प्रक्रिया पर जानकर बल दिया है। क्योंकि हाल ही में सम्पन्न हुए पांच राज्यों के चुनाव परिणामों के लिहाज से अबतक उपेक्षित इस पक्ष को देखे बिना हम जन के मन का सही-सही आँकलन करने में चूक कर जाएंगे। साथ ही सामने दहलीज पर ही खड़े लोकसभा चुनावों के नगाड़ों के शोर में मतदाता का वास्तविक मन्तव्य भी समझा जाना चाहिए।

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के परिणामों का साफ संकेत है कि जनता देश के बड़े राजनीतिक दलों से भी कुछ अपेक्षाएं रखती है। उत्तर भारत के तीन बड़े राज्यों में भाजपा की पराजय और उसकी जगह कांग्रेस के सत्तासीन होने को केवल 'रेगुलर चेंजेज' मान लेना कतई जनहित में नहीं है। यह परिणाम जहां भाजपा के लिए अलार्म हैं वहीं कांग्रेस के लिए कुछ सैद्धांतिक-व्यावहारिक परिवर्तनों के साथ फिर से खड़े होने की प्रेरणा लिए हैं।

शुरुआत राजस्थान से करते हैं। क्या ऐसा कोई संकेत है कि भाजपा को सत्ताबदर करने से पहले यहाँ की जनता ने कोई संकेत पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को दिया हो? 2018 के ठीक प्रारंभ में राजस्थान में तीन उपचुनावों का परिणाम आया था। दो उपचुनाव लोकसभा के थे व साथ ही राज्य विधानसभा की एक सीट के लिए परिणाम भी आया। कुल मिलाकर 17 विधानसभा क्षेत्रों का यह चुनाव परिणाम था। जिनमें से भाजपा एक सीट पर भी बढ़त नहीं ले पायी थी। मतलब जनता ने अपना संकेत दे दिया था। उस संकेत को भाजपा नहीं समझ पायी, यह उसकी कमजोरी कही जाएगी। परन्तु इसका भाजपा संगठन से क्या लेना-देना? तो संक्षेप में इसका जवाब है कि 2013 में वसुंधरा राजे के नेतृत्व में राजस्थान की सत्ता में आई भाजपा ने संगठन को सत्ता का पिछलग्गू बना देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यहां तक कि चुनावों से ठीक पहले प्रदेशाध्यक्ष पद के लिए केंद्रीय और स्थानीय नेतृत्व में जैसी खींचतान चली व अंत में केंद्र को ही पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा, यह सारा घटनाक्रम राजस्थान की जनता को बिल्कुल नहीं सुहाया। दूसरी तरफ कांग्रेस ने युवा नेता सचिन पायलट के नेतृत्व व पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के अनुभव के सहारे प्रदेश में नए सिरे से संगठनात्मक गतिविधियों और कार्यक्रमों की शुरुआत की। जिसका लाभ कांग्रेस को मिला। भारत के लोकतंत्र के लिए इसे शुभ संकेत मानना चाहिए कि हमारा सामान्य मतदाता अब

परिपक्व हुआ है। वह विचार, व्यक्ति व संगठन में अंतर अब कर सकता है। इसलिए इस अंतर को पहचान कर मतदाता ने मतदान किया और भाजपा द्वारा की गयी उसकी भावनाओं की उपेक्षा के दण्डस्वरूप उसे सत्ता से बेदखल कर दिया। परन्तु साथ ही कांग्रेस को बहुमत से एक सीट दूर रखकर उसे अधिक सुधार की गुंजाइश पर रख छोड़ा।

राजस्थान में भाजपा के मत प्रतिशत में पिछले लोकसभा चुनाव की तुलना में 7 प्रतिशत की कमी के भी अधिकतर स्थानीय कारण गिनाए जा सकते हैं। लेकिन फिर भी भाजपा को आत्मपरीक्षण की बहुत ज्यादा आवश्यकता आज राजस्थान में है।

इसी प्रकार छत्तीसगढ़ के चुनाव परिणाम भी राजनीतिक पंडितों के लिए भले आकस्मिक हों, लेकिन कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पिछले पांच साल में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने पार्टी में जिस तरह सांगठनिक कसावट लाकर संघर्ष किया उसका प्रतिफल ही जनता के वोट के रूप में आज कांग्रेस को प्रचण्ड बहुमत के रूप में मिला। कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व ने भी इस सच्चाई को भांप सरकार की कमान बघेल को सौंपने में संकोच नहीं किया। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने अजीत जोगी और ऐसी मंडली को सीधे-सीधे बाहर का रास्ता दिखाना भी जनता के मन को भाया, ऐसा कह सकते हैं।

मध्यप्रदेश में लगभग राजस्थान की तर्ज पर कांग्रेस ने अपने सांगठनिक ढाँचे को विश्वसनीय बनाने का प्रयास किया और उसका यह दांव वहां भी सफल रहा। ज्योतिरादित्य सिंधिया और कमलनाथ ने केंद्रीय नेतृत्व के निर्देशन में एक सुगठित टीम के रूप में काम किया। पार्टी पर बोझ बन चुके दिग्विजय सिंह जैसे कद्दावर नेता को तवज्जो नहीं देकर जनता में साफ-साफ संकेत दिया। अत: जनता की तरफ से कांग्रेस को सत्ता की चाबी के रूप में प्रतिसाद मिला। लेकिन फिर भी प्रदेश की जनता ने भाजपा को लगभग कांग्रेस के बराबर रखकर उसे अपने में अपेक्षित सुधार का संकेत दिया है। अब यह भाजपा पर निर्भर है कि वह इन संकेतों से क्या और कितना समझती है।

केवल यह नहीं कि तीनों राज्यों की जनता ने बड़े राजनीतिक दलों को सबक सिखाने के लिए वोट किया। एक सबक उसने भी सीखा कि हमारे राजनीतिक दल लोकतंत्र के साथ खुद को अभी इतना समावेशित नहीं कर पाए हैं कि उन्हें एकतरफा बहुमत देकर सत्ता सौंपने का जोखिम उठा लिया जाए। अत: राजनीति में शक्ति के सन्तुलन को उसने फिर से कायम किया।

2019 का चुनाव दोनों बड़े दल जीने-मरने की तैयारी के साथ लड़ने के संकेत दे रहे हैं। भाजपा के लिए आवश्यक होगा कि वह युद्ध के पहले लड़ी गई इस रिहर्सल लड़ाई से सबक सीखे।

तीनों राज्यों में भाजपा द्वारा अपने संगठन की उपेक्षा की कीमत पर प्रधानमंत्री मोदी व उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी जैसे स्टार प्रचारकों पर अत्यधिक निर्भरता भी भारी पड़ी। भाजपा को समझना चाहिए कि संगठन उसकी आत्मा है। इसकी उपेक्षा कर वह ज्यादा लम्बी नहीं चल सकती। पिछले सत्तर सालों में समाज के कई वर्गों के बीच कांग्रेस ने अपना एक मजबूत वोट बैंक तैयार किया है। भाजपा को यह सुविधा बिल्कुल नहीं है। कुल मिलाकर पं. दीनदयाल उपाध्याय और सुंदरसिंह भंडारी जैसे संगठनकर्ताओं को अपनी प्रेरणा बताने वाली भाजपा के लिए यह समय 'संगठन की ओर लौटो' का है।

क्रमश: पृष्ठ 4 से

आज के भारत को युवा भारत कहा जाता है क्योंकि हमारे देश में असम्भव को संभव में बदलने वाले युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। आंकड़ों के अनुसार भारत की 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष आयु तक के युवकों की और 25 साल उम्र के नौजवानों की संख्या 50 प्रतिशत से भी अधिक है। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि युवा शक्ति वरदान है या चुनौती? महत्वपूर्ण इसलिए भी यदि युवा शक्ति का सही दिशा में उपयोग न किया जाए तो इनका जरा सा भी भटकाव राष्ट्र और समाज के भविष्य को अनिश्चित कर सकता है।

युवा आत्मविश्वास का धनी होता है, वह ऊर्जा से ओत-प्रोत रहता है। यदि युवा ऊर्जा के बिखराव को रोक सके तो जिस तरह सूर्य की किरणों को सुनियोजित कर बिजली पैदा की जाती है वैसे ही युवा वर्ग अपनी ऊर्जा को सुनियोजित कर किसी लक्ष्य की ओर अग्रसर होंगे तो कामयाबी निश्चित है। युवा कठिन चुनौतियों से कभी पीछे नहीं हटता बल्कि संघर्ष करते हुए रास्ता बनाकर मंजिल तक पहुँचता है।

वर्तमान में देश जिस उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा है, आशंकित है आगे क्या होगा? पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार का दावानल, सूखते जल स्त्रोत, बढ़ती बेरोजगारी, नशाखोरी, आराजकता की भयावह दृश्य को केवल और केवल युवाशक्ति ही मिटा सकती है। पूर्व में हुई क्रांतियों की ही भांति आज के युग एक क्रांति की आवश्यकता है। सारे देश की निगाहें आज युवा शक्ति पर टिकी हुई है। अत: युग निर्माण के मंच से ऐसे युवाओं का आह्वान किया जाना चाहिये, जिनके दिल में देश और समाज के लिये कुछ करने की ललक हो, ऐसे युवाओं को मुख्य धारा से जोड़ना होगा।

उम्मीदों की पतंगों ने भरी उड़ानें हौसलों की।
चलो अब देखते हैं ऊंचाइयां इन आसमानों की।।

नई सरकार से जनता की उम्मीदें

माही संदेश ने आम जनता से मिलकर जाना कि आखिर क्या-क्या आशाएं हैं उसके दिल में अपनी नवनिर्वाचित सरकार के लिए, इस दौरान कई बातें सामने आईं कि सड़क, बिजली और पानी से इतर अभी भी कई ऐसे काम हैं जिन्हें आवश्यक रूप से करना बेहद जरूरी दिखाई पड़ता है।

वादे नहीं कुछ काम कर के दिखाए सरकार

फिर से हुआ सत्ता में बदलाव, पाँच साल बाद फिर कांग्रेस की सरकार लौट कर आई है। जिस कदर प्रधानमंत्री मोदी की लहर पूरे भारत में फैली हुई थी उस से बाहर आकर कांग्रेस ने फिर से राजस्थान में जीत हासिल तो कर ली, मगर सत्ता व समाज में अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए इस बार कांग्रेस को बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा।

माया सिंह
जयपुर

जनता की समस्याओं में सबसे बड़ी और पहली प्राथमिकता है पानी। जहां बीजेपी की सरकार ने घोषणा की है कि वो अरब सागर से पानी लाएगी, हम तो कांग्रेस सरकार से उम्मीद करते हैं के वो सिर्फ चम्बल नदी से ही राजस्थान के हर घर में पानी पहुँचाने का प्रयास करे। प्राइवेट स्कूलों की फीस पर नियन्त्रण किया जाना भी बहुत जरूरी है। इसी प्रकार महिला शिक्षा व सुरक्षा को लेकर कुछ खास कार्य किए जाने चाहिए।

वैसे ही जयपुर शहर में स्वतंत्र मकान की जगह फ़्लैट का चलन बहुत बढ़ा गया है, जिसे भी कंट्रोल करना जरूरी है। कुल मिलाकर इस बार सरकार के सामने कुछ ज्यादा ही चुनौतियां रहेंगी और अब देखना यह है कि कैसे सरकार आम आदमी को खुश कर पाती है। आगामी चुनाव जीतने के लिए सरकार को चाहिए कि वो बीजेपी की तरह वादे नहीं कुछ काम कर के दिखाए।

बनी रहे कानून व्यवस्था

आम जनता प्रदेश की नवनिर्वाचित सरकार से चाहती है कि राज्य में अमन और चैन का माहौल कायम रहे। जातिवाद बंद हो, और कानून व्यवस्था बनी रहे।

– **प्रेम सिंह बनवासा,** *व्यवसायी।*

युवाओं को अधिक से अधिक रोजगार दें

सभी जगहों राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ में जहां जहां नई सरकार बनी है वहां जनता को नई सरकार से यही उम्मीद है कि वह कोई ऐसा कार्य न करे जिसके कारण जनता ने पिछली सरकार को सत्ता से बेदखल कर दिया। फिर भी यह एक अभिलाषा है कि पिछली सरकार के वह कार्य जो दोषपूर्ण कार्यप्रणाली में सम्मिलित नहीं हैं उन कार्यों को प्रतिबंधित न करे उन्हें सुगमता पूर्वक चलने दे तथा चुनाव से पहले जो वादे किये थे वे वादे भी पूरे करें। सरकार को चाहिए कि वे शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाएं जितना शिक्षा का स्तर ऊंचा होगा उतना ही राज्य का विकास संभव है। शिक्षा से ही सभी दोषपूर्ण प्रणालियों का अन्त संभव है। भ्रष्टाचार मिटाने को लेकर सरकार को ठोस कदम उठाना चाहिए। सबसे बड़ी बात जनता की बात सरकार तक कितनी आसानी से पहुंच सके इसका प्रबंध अवश्य करना चाहिए। शीतकालीन दिनों में नई सरकार बनी है तो अभी की प्रमुख समस्या जो लोग ठंड में बाहर ही रात व्यतीत करते हैं उनके लिए पहले रैन बसेरों का इन्तजाम करना चाहिए। पक्की सड़कें बनवाना, विद्यालयों में उचित प्रबंध करना, गरीब लोगों को घर प्रदान करना तथा जो भी कार्य करें उनकी देखरेख अवश्य करें अर्थात जो भी योजनाएं बनाएं वो जमीनी स्तर पर दिखनी चाहिए। युवाओं को अधिक से अधिक रोजगार दें तथा किसी भी भर्ती को समय से पूर्ण करें तथा यह भी ध्यान रखें कि भर्ती भ्रष्टाचार से मुक्त हो इसका हर संभव प्रयास करें।

आशुतोष कुमार
उत्तरप्रदेश

अंत में यही सरकार से जनता की उम्मीद है कि–

भेद–भाव की न रहे प्रणाली, न रहे किसी से द्वेष
मुखौटा चेहरे पर न लगाना, हरदम दिखे तुम्हारा असली भेष
साथ लेकर चलना सबको, करना न तुम प्रतिकार
जो देखे जनता ने सपने, करना तुम उनको साकार।

जनता के हितों का पालन हो

विजयशंकर शर्मा

वर्तमान राज्य सरकार से मैं यही उम्मीद रखता हूँ कि किसानों से किए गये वादों पर खरा उतरे, ऐसे अवसर लाये जिससें राज्य आर्थिक व सामाजिक रूप से सुदृढ़ हो, जनता के हितों का पालन हो, सरकार अपने भ्रष्ट व असामाजिक कार्यकर्ताओं को सरकार की कार्यकारिणी से बहिष्कृत कर दे ताकि एक सुदृढ़ व मानवतावादी राज्य का निर्माण हो सके।

जय हिन्द, जय राजस्थान।

महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करें

राकेश चौधरी

नई सरकार का प्राथमिक दायित्व बनता है कि वो राज्य में व्यापक स्तर पर छाई हुई समस्या,बेरोजगारी के लिए तत्काल व सुनियोजित कदम उठाये ताकि समय समय पर समुचित मात्रा में विभिन्न विभागों में भर्तियाँ निकलें ताकि बेरोजगार युवाओं की समस्याओं का शीघ्र ही समाधान निकले। देश में किसानों को उनकी फसलों का उचित मूल्य समय पर मिले व फसलों की खरीद पर बिचोलियों पर लगाम लगे साथ ही लघु उद्योगों को और विशेषकर खेती से जुड़े उद्योगों को विस्थापित करने के प्रयास किए जाने चाहिए, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पेयजल इत्यादि मूलभूत आवश्यकताओं को आमजन तक पहुँचाने के समुचित प्रयास करें। साम्प्रदायिक सौहार्द कायम करने का कार्य करें, महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

रुके हुए सरकारी प्रोजेक्ट्स की बढ़े गति

आयुष भारद्वाज

नई सरकार का मुख्य उद्देश्य भ्रष्टाचार को खत्म करके सुराज को स्थापित करना होना चाहिये, रुके हुए सरकारी प्रोजेक्ट्स को गति भी दी जानी चाहिए। प्रदेश में निवेश की अपार संभावनाएं हैं अत: इसको लेकर बेहतर व्यवस्था बनाई जा सकती है ।

आर्थिक आधार पर आरक्षण की व्यवस्था

गजेंद्र सिंह नरूका
फागी

नई सरकार से हमें उम्मीद है कि सरकार शिक्षित नवयुवकों के लिए रोजगार प्राप्ति के नए नए आयाम स्थापित करें व। आर्थिक स्थिति के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था हो, इसके अलावा पंचायत स्तर पर मूलभूत जन-सुविधाओं का लाभ आम जनता को मिले, ग्रामीण स्तर पर सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, मृत्यु-भोज, पूर्णत: बंद हों ऐसी मानसिकता सभी नव युवकों में बने।

आम जनता को न हो परेशानी

विकास बागड़ा,
बैंकर

नई सरकार को युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने चाहिए। सरकारी नौकरियों के अतिरिक्त गैर सरकारी क्षेत्रों में अधिक रोजगार सृजन करें। जिन कमियों के कारण पिछली सरकार में आम जनता को परेशानी हुई उन कमियों को शीघ्र दूर किया जाना चाहिए।

किसानों पर दें पर्याप्त ध्यान

भानु प्रताप सिंह,
अधिवक्ता

वर्तमान राजस्थान सरकार में युवा एवं अनुभवी जन-प्रतिनिधियों का मिश्रण है। प्रदेश सरकार को युवाओं के खातिर रोजगार उपलब्ध कराना, कृषकों को सब्सिडी पर खाद, बीज एवं कृषि उपकरण उपलब्ध कराने के साथ ही महिलाओं, छात्राओं के लिए लाभकारी योजनाओं की शुरुआत करने पर भी ध्यान देना चाहिए।

कार्यों की मॉनिटरिंग व्यवस्था हो सही

मनोज शर्मा,
युवा व्यवसायी

पार्टी की राजनीति से ऊपर उठ कर आम जनता के हितों के लिए सोचें, पिछली सरकार के अच्छे प्रोजेक्ट्स को जारी रखें और सरकार की योजनाएं वास्तविकता में आमजन तक पहुँच रही हैं या नहीं इसकी मोनीटरिंग के लिए उचित व्यवस्था करे।

मूलभूत उम्मीदों पर पहले ध्यान दे सरकार

सरकारों का आना-जाना प्रजातंत्र का महत्वपूर्ण अंग है । एक नियत समय के पश्चात् सरकार का कार्यकाल समाप्त हो जाता है और फिर लोकतांत्रिक तरीके से फिर एक सरकार चुनकर आती है । वो राज्य की भी हो सकती है और सम्पूर्ण देश की भी । जिन्हें हमारे देश में विधानसभा व लोकसभा नाम दिया गया है । अभी-अभी हमारे राजस्थान राज्य में भी विधान सभा के चुनाव हुए हैं जिसमें जो पार्टी की सरकार राज कर रही थी उसे राज्य की जनता ने नकार दिया और दूसरी पार्टी को बहुमत प्रदान कर उसे राज करने का अधिकार दे दिया।

जब कोई सरकार बदलती है या पुरानी सरकार को हटाकर नयी सरकार को राज्य की जनता चुनती है तो ये तय है कि तात्कालिक सरकार जनता की उम्मीदों पर खरी ना उतरी होगी इसलिए उन्हें चुनाव में हार का मुख देखना पड़ा । जब अब नई सरकार ने अपना दायित्व संभाल ही लिया तो जनता इस सरकार से भी उम्मीदें रखती ही है। जिनमें निम्न हो सकती है-

राज्य की आंतरिक सुरक्षा

आंतरिक सुरक्षा के मायने राज्य के सभी लोगों की संपत्ति की सुरक्षा, लूटपाट व चोरियों से सुरक्षा व सभी के मानवीय मूल्यों की सुरक्षा की उम्मीदें रहेगी ।

शैक्षिक व्यवस्था

के अंतर्गत जनता नई सरकार से जो विद्यालय बंद कर दिये गये उन्हें पुनः चालू करें साथ ही प्रत्येक ब्लाक स्तर पर बालिका महाविद्यालय खुलवाये जिससे छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए अंतर ना जाना पड़े । ये उम्मीद भी करेगी ।

बिजली व पानी की सुव्यवस्था

हमारे राज्य में बिजली कटौती एक भीषण समस्या है कुछ हद तक पिछली सरकार ने इस पर काबू पाया था इस सरकार से भी उम्मीद रखी जायेगी कि ये बिजली कटौती कम से कम ही हो । नई सरकार राज्य में कम पानी वाले क्षेत्र चिन्हित करें और चम्बल जैसी नदियों से वहाँ पानी पहुंचाने का प्रबंध करें । ये भी उम्मीद की जा रही है ।

बेरोजगारी की समस्या

राज्य के हर जिले में बड़े उद्योग लगवाने का प्रयास करें साथ ही कुटिर उद्योगों के विकास व प्रबंधन के लिए सरल लोन व्यवस्था करें । जिससे बेरोजगारी पर अंकुश लगे व रिक्त स्थानों पर सरकारी सेवा में भर्ती करें । ये भी नई सरकार से उम्मीद की जा सकती है ।

आजकल नई सरकारों का ये चलन सा बन गया है कि पिछली सरकार द्वारा चलाई गयी योजनाओं को हटाकर के दूसरी अपनी योजनाएं लागू करते हैं अपनी लागू करो अच्छी बात है पर जो योजना पिछली सरकार द्वारा जो चालू कर रखी थी और वो समाज व राज्य के लिए अच्छी है उन्हें चालू ही रखी जावे ये भी नई सरकार से उम्मीद की जा सकती है । विषय बहुत बड़ा है और भी उम्मीदें हो सकती हैं पर यहाँ मूलभूत उम्मीदों पर ही ध्यान दिलाया गया है ।

विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'
गंगापुर सिटी, स.मा.

दूरदराज से नियुक्त शिक्षकों को आवास मुहैया कराएं

ज्योत्सना सक्सेना
उदयपुर

नई सरकार और नए वर्ष का सूर्य .... नई लालिमा नवल ऊर्जा हमारे समाज में संचरित हो, कामना है। आज शिक्षा अपने मूल उद्देश्य से भटक रही है। शिक्षा में गुणवत्ता के गिरते स्तर को सबसे पहले सरकार को संभालना होगा। शिक्षा के क्षेत्र में तरह तरह के प्रयोग विचारणीय हैं। वर्तमान में मुफ्तखोरी का दीमक धीरे-धीरे पूरी शिक्षा व्यवस्था को चाट रहा है। शिक्षा अपने असली उद्देश्य की राह से भटकती जा रही है। बड़ी पीड़ा होती है जब ग्रामीण अभिभावक मेरे पास आते हैं वे अपने बच्चे का अध्ययन स्तर जानने की अपेक्षा केवल नई योजनाओं को जानने के लिए उत्सुक होते हैं। शिक्षकों का ध्यान भोजन, दूध, पुस्तकें और तरह-तरह की छात्रवृत्तियां बांटने में और फिर उनका हिसाब किताब बिठाने में खर्च हो जाता है। पोषण स्तर सुधारने के लिए अन्य विभाग से मदद लें। सरकारी विद्यालयों के बच्चों के लिए बसें लगा दी जाएं तो बच्चों का समय बचेगा। दूरी के कारण जो बच्चे पढाई छोड़ देते हैं, वे जुड़े रहेंगे।

विद्यालय परिसर में ही दूरदराज से नियुक्त शिक्षकों को आवास मुहैया कराये जाएं ताकि वे सुकून से रह सकें व ग्रामीण परिवेश में वे बच्चों को

जनता की उम्मीद पर खरा उतरे सरकार

लोकतंत्र की पहली शर्त जनता के लिये जनता द्वारा ही जनता की सरकार चुना जाना है। यही एक वजह है कि एक नियत समय के बाद देश चुनाव प्रक्रिया से गुजरता है जिसमें हमारे नेतागण कुछ सीढ़ियां उतर कर अपने वायदों की एक लंबी फेहरिस्त के साथ जनता से मुखातिब होते हैं।

यह वो वायदे ही बोते हैं जो विपक्ष प्रलोभन के रूप में जनता के समक्ष यह कह कर प्रस्तुत करता है कि वर्तमान सरकार इन्हें पूरा नहीं कर पाई और हम निश्चय ही इन्हें पूरा करेंगे। जनता इस 'झांसे' में आकर विपक्ष को जिता देती है क्योंकि उम्मीद पर ही दुनिया कायम है।

इस बार भी चुनावों में यही देखने को मिला। वरिष्ठ पत्रकार ईश मधु तलवार के अनुसार ' पेट्रोल-डीजल के दाम, किसानों की समस्याएं, बेरोजगारी, नोटबंदी और जीएसटी आदि वो मुद्दे हैं जिन पर नयी सरकार चुनी गयी है। 'पिछली सरकार का जनता की उम्मीद पर खरा न उतरना भारी पड़ा और नयी सरकार निर्मित हुई। अब जनता बड़ी आशा से नयी सरकार की ओर देख रही है। नयी सरकार के लिये सबसे बड़ी चुनौती होगी उपभोक्ता सामग्री के बढ़ते मूल्यों पर रोक लगाना। सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती कमरतोड़ मंहगाई ने पिछले वर्षों में जनता को बेहद निराश किया है। बहुत कम अंतराल पर बार-बार बढते हुए पेट्रोल के दाम और उसके कारण रोजमर्रा की जिन्दगी में उपयोग की वस्तुओं का महंगे होने से जनता पर दोहरी मार पड़ी है।

हाल ही मे देखा गया कि प्याज की फसल बेहद अच्छी होने के बावजूद किसानों को आत्महत्या जैसा दु:खद कदम उठाना पड़ा क्योंकि उन्हें लागत मूल्य भी नहीं मिला। इधर जनता फिर भी दो रुपये किलो में किसानों द्वारा बेची जाने वाली प्याज 25 से 30 रुपये में खरीदने पर मजबूर है। दामों में इतना अंतर तो नहीं होना चाहिये ।

एक अन्य समस्या जो आम जनता को परेशान रखती है, वो है सड़कों की बदतर हालत। कुछ मुख्य सड़कों को छोड़ दें, तो पूरा राज्य बदहाल, टूटी-फूटी, गड्ढों भरी सड़कों पर आवागमन के लिये बाध्य है। बारिश में इनमें पानी भर जाने से कीचड़ उत्पन्न हो जाती है। ये सड़कें अनगिनत दुर्घटनाओं को अंजाम देती हैं; यातायात की रफ्तार धीमी करती हैं, जिससे बहुमूल्य समय का अपव्यय होता है। सरकारें चुनाव नजदीक आने पर ही चेतती हैं और इन्हें मरम्मत करवा दिया जाता है। कुछ समय बाद वही ढाक के तीन पात। मोबाइल कंपनियां केबल बिछाने के लिये फिर से हाल ही में सुधारी गयी सड़कों को उधेड़ कर रख तो देती हैं, मगर बाद में दुरुस्त नहीं करती हैं और जनता को सड़कें कभी भी सही हालत में नहीं मिलतीं। शिवाजी मार्ग, तिलक नगर वासी सुरेंद्र शेखावत के अनुसार नयी सरकार से उम्मीद की जाती है कि वह योजनाबद्ध तरीके से कार्य करे जिससे धन की बचत भी हो और जनता को सुविधा भी।

कचरे की समस्या भी एक गंभीर मसला है जिसका स्थायी समाधान ढूँढना आवश्यक है। तिलक नगर की वसुधा अग्रवाल, रश्मि सौंखिया के अनुसार पिछले कुछ महीनों से नगर निगम की गाड़ी कचरा एकत्रित करने आती है, ये अच्छी बात है। इस वजह से डस्टबिन भी हटा दिये गये थे। लेकिन फिर भी गंदगी बरकरार रहती है, क्योंकि घरों-सड़कों के सफाई कर्मचारी और कचरा-गाड़ी के समय में तालमेल नहीं होता। प्रथम जगत के देशों से सीखा जा सकता है और कड़ी व्यवस्था की जा सकती है, जो कि कोई मुश्किल काम नहीं है, बस इच्छाशक्ति की दरकार है।

सड़कों पर पशुओं की समस्या भी व्याप्त है, जिसके लिये सरकार को बिना उन्हें नुकसान पहुँचाये, बल्कि उनका उचित भरण-पोषण हो, इस तरह से समाधान निकालना चीहिये।

डॉ. कविता माथुर

शिक्षण के लिए अतिरिक्त समय दे सकें। कर्मचारी को यथासंभव उसके गृहनगर में ही रखा जाये। तबादले की प्रक्रिया में पारदर्शिता हो, ऑन लाइन तबादले हों आधार कार्ड उसमे भी देखे जाएँ जिससे बड़े शहरों के लोभ में गाँव से पलायनवादी संस्कृति में भी कमी हो। ग्रामीण परिक्षेत्र के विद्यालयों की सीनियर कक्षाओं में ज्यादा से ज्यादा प्रायोगिक विषय खोले जाएँ व व्यवसायिक शिक्षा पर बल दिया जाये।

कटते जंगलों पर रोक लगाएं

विकास चौधरी
जयपुर

नवनिर्वाचित सरकार से मुझे उम्मीद है कि वो युवाओं को रोजगार प्रदान करेंगे और किसानों को उनके द्वारा तैयार कि गईं फसल अच्छी कीमत मिले गाँवो में सड़क, बिजली, चिकित्सा , शिक्षा और पानी की सुविधा सुचारु रूप से मिले आवागमन के लिए परिवहन के व्यवस्था हो । समाज में फैली कुरूतियाँ को समाप्त करें व कटते जंगलों पर रोक लगाएँ और बजरी खनन, आपराधिक घटनाओं पर लगाम लगाने की उम्मीद करता हूँ और समाज के लिए एक अच्छा वातावरण तैयार करें जिसमें औरत स्वयं को महफूज़ समझें। जय हिन्द

'राष्ट्रवाद' का भुवन हारना नहीं चाहिए

दीपक आजाद

कई सालों तक अकाल की सी हालत झेलने के बाद जब गांव में एकाएक बारिश होने लगती है तो वहां माहौल भी कुछ-कुछ हिंदी फिल्म 'लगान' जैसा हो जाता है। इस दौर ए लगान में हर कोई अपने आपको 'भुवन' समझने लगता है। ऐसा ही कुछ दौर हम सबके प्यारे मुल्क में चल रहा है। आजादी के बाद चुनावों में इक्का-दुक्का बूंद पानी की तरह गिरने के बाद 2014 के लोकसभा चुनाव में राष्ट्रवाद की जोरदार बारिश हुई। इसके साथ ही शुरू हुआ देश में राष्ट्रवाद का दौर। इस बीच देखो जहां राष्ट्र चिंतन के बादल उमड़-घुमड़ करने लगे। बड़े-बड़े शहरों से लेकर छोटे-छोटे गांवों में भी हर कोई अपने-अपने हिसाब से राष्ट्रवाद की व्याख्या कर खुद को धरतीपुत्र मानने लगा। यहां तक की राजनीति के गलियारों में भी बरसों तक 'नेताजी जिंदाबाद' के नारे सुनने के अभ्यस्त अखिल भारतीय नेताओं को भी 'भारत माता की जय' के साथ कॉम्प्रोमाइज करते हुए देखना आम होने लगा था। माहौल इतना राष्ट्रवादी होने लगा कि न्यूज चैनल से लेकर, हिंदी फिल्में, पंखे, कूलर, छत पर रखी जाने वाली पानी की टंकियां भी राष्ट्रवादी शीर्षकों के साथ यहां वहां बिकती नजर आईं। यहां तक की टॉइलेट सीट और चप्पलें तक राष्ट्रवाद के रंग में रंगी नजर आने लगीं। मार्केट पर हर तरफ राष्ट्रवादियों ने अपना कब्जा जमा लिया था। सब कुछ किया जाने लगा जिससे लगे कि वे सही मायने में पहले वालों यानि गांधीवादियों से ज्यादा राष्ट्रवादी हैं। खैर, वैसे भी यहां इतना विवाद तो सामान्य है कि गांधीवादी, राष्ट्रवादी नहीं और राष्ट्रवादी, गांधीवादी नहीं हो सकता। शहर के सिनेमा हॉल में बैठने के बाद जैसे ही फिल्म शुरू हुई तो राष्ट्रगान का गायन होने लगा। मल्टीप्लेक्स में जितने भी यंगस्टर्स बैठे थे, वे देश के सम्मान में खड़े हो गये। जो खड़े नहीं हुए उन्हें पब्लिक में मौजूद राष्ट्रवादियों ने अपनी किरांती के दम पर एक ही झटके में खड़ा कर दिया। इतना

इस 'लोकतंत्र' को 'भीड़तंत्र' होने से बचाने के लिये क्या किया जाना चाहिए। हमारा राष्ट्रवादी 'भुवन' छोटी बुद्धि वाला नहीं है, उसने फिल्म में अल्प समय में ही बड़ी जीत पाई थी। वैसे ही इस 'भुवन' के पास ज्यादा समय नहीं है, उसे अपनी तरफ सच्चे दिल से खड़े लोगों को पहचानना होगा।

राष्ट्रवादी माहौल सच में अब तक नहीं हुआ होगा या किसी को नहीं दिखा होगा। जितना की अब हो रहा है या दिख रहा है। भारत में राष्ट्रवाद बढ़ता देख स्वर्ग से धरती की ओर टकटकी लगाए बैठे बापू को भी याद आ गया कि वे भी राष्ट्रवादी ही थे। यों तो आजादी के बाद और 2014 से पहले वालों ने ही 'गांधीवाद' नाम का नया 'वाद' चलन में लाया था। ये ठीक वैसे था जैसे अब वालों ने 1000 का नोट बंद कर 2000 का नोट शुरू करवाया था। फिलहाल बापू को इन सबसे कोई आपत्ति नहीं है, वे तो यह देख कर खुश हैं कि पहले वालों से दोगुना सम्मान 2014 के बाद आने वालों से मिल रहा है उन्हें।

पर सच बात है अब जिस तरह से देश की स्कूलों में वंदे मातरम और राष्ट्रगान के लिये बेवजह जिरह की जा रही है वो काबिल ए तारीफ है। 2014 से अब तक बहुत सी बातें बदली हैं देश में। हां, तब से अब तक बस एक ही बात है जो नहीं बदली है और शर्तिया कह सकता हूं कि दुनिया इधर से उधर हो जाये मगर ये बात कभी भी नहीं बदल सकती। वो यह कि गांधीवादी तब भी सार्वजनिक डिबेट में राष्ट्रवादियों से पूछा करते थे कि आजादी में आपका क्या योगदान था? और अब भी यही पूछते हैं। मजे की बात तो यह है कि डिबेट में बैठा एंकर भी इस अजीब सवाल से ऊब सा गया है।

मगर इन सबके बीच राष्ट्रवाद की जोरदार बारिश में खुश होते राष्ट्रवादी 'भुवन' को ये भी सोचना चाहिए कि इस राष्ट्रवाद की अच्छी बारिश को सतत बनाये रखने के लिये क्या प्रयास किया जाना चाहिए। राष्ट्रवाद को अगर जीवन देना है तो अपने से विपरीत 'वाद' को भी गले लगाना होगा यथा - 'गांधीवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद।' इसके साथ ही सोचना होगा कि सड़क-चौराहों पर इंसाफ करती इन तंग-दिल भीड़ से देश के अबोध लोगों को कैसे बचाया जाये। इस बीच ये भी सोचा जाना चाहिए कि इस 'लोकतंत्र' को 'भीड़तंत्र' होने से बचाने के लिये क्या किया जाना चाहिए। हमारा राष्ट्रवादी 'भुवन' छोटी बुद्धि वाला नहीं है, उसने फिल्म में अल्प समय में ही बड़ी जीत पाई थी। वैसे ही इस 'भुवन' के पास ज्यादा समय नहीं है, उसे अपनी तरफ सच्चे दिल से खड़े लोगों को पहचानना होगा। खुले हाथों की मुठ्ठियां कसकर एक बनना होगा और सोचना होगा कि अकाल से झुलसते अपने खेतों में कैसे हरियाली की चादर ओढ़ाई जाए। अपने इस उजड़े बाग को कैसे फूलों से महकता चमन बनाया जाये।

भारतीय सेना दिवस 15 जनवरी

नित्या शुक्ला

फिल्मी पर्दे पर अपने अभिनेताओं को एक साथ 10- 10 गुंडों की पिटाई करते या उन्हें दुश्मनों को मारते देखा होगा, लेकिन अगर आपको असल जिंदगी में हीरो देखने हैं, तो आपको सीमा पर तैनात उन बहादुर नायकों को देखना चाहिए जो खून को जमा देने वाली ठंड में भी भारतीय सीमा की रक्षा के लिए जी जान एक कर देते हैं। अगर बहादुरी के सर्वोच्च शिखर को महसूस करना हो ,तो जैसलमेर जैसी गर्म जगह पर ऊंट पर बैठकर हमारी सीमाओं की पहरेदारी करने वाले सैनिकों से मिलना चाहिए, जो जला देने वाली गर्मी में भी अपनी परवाह किए बिना देश की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं।

इन वीर सैनिकों को अपनी परवाह बताने का दिन है 15 जनवरी जिसे 'भारतीय सेना दिवस' के रूप में मनाया जाता है, सेना दिवस दरअसल सेना की आजादी का जश्न है। इसकी शुरुआत भारत के लेफ्टिनेंट जनरल के एम करियप्पा को सम्मान देने के लिए हुई जो भारत के पहले प्रधान सेनापति थे। 15 जनवरी 1948 को पहली बार जनरल के.एम. करिअप्पा को देश का पहला लेफ्टिनेंट जनरल घोषित किया गया था। इसके पहले ब्रिटिश मूल के फ्रांसिस बूचर इस पद पर थे। इस दिन की शुरुआत देश की राजधानी के इंडिया गेट पर बनी अमर जवान ज्योति पर शहीदों को श्रद्धांजलि देने के साथ होती है। इसके बाद सेना अपने दमखम का परिचय आर्मी डे परेड के द्वारा देती है । इस दिन वीर सैनिकों को वीरता पुरस्कारों से भी नवाजा जाता है। इस दिन सेना के सभी छह कमान मुख्यालय में परेड आयोजित की जाती है और सेना अपनी-अपनी मारक क्षमता का प्रदर्शन करती है। इस मौके पर सेना के अत्याधुनिक हथियारों और साजो सामान आदि भी प्रदर्शित किए जाते हैं।

आइए जानते हैं भारतीय थल सेना की कुछ शौर्य गाथाएं जो हमें भारतीय सेना पर गर्व करने का अवसर प्रदान करती हैं।

भारतीय सेना के कई कारनामे, घटनाएं और तथ्य हैं जो कि भारतीय सेना को अपने आप में अद्भुत बनाते हैं। चाहे वह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हैदराबाद विलय की दास्तां हो या 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध में भारत की विजय की कहानी या फिर कारगिल युद्ध में पड़ोसी देश पाकिस्तान के विश्वासघात पर देश के वीरों की विजय की कथा, हर जगह भारतीय सेना के वीरों ने अपनी शौर्य की अमिट दास्तान प्रस्तुत की है।

कुछ तथ्य जो भारतीय सेना की वीरता की मिसाल हैं

1971 के पाकिस्तान युद्ध में करीब 93000 सैनिकों और अधिकारियों ने भारतीय सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हिरासत में लिए गए युद्ध बंदियों की यह सबसे बड़ी संख्या थी और इसी युद्ध के बाद बांग्लादेश बना था।

दुनिया में सबसे ऊंचे पुल का निर्माण भारतीय सेना के द्वारा किया गया है । बेली पुल जो कि हिमालय पर्वत की द्रास और सुरू नदियों के बीच लद्दाख घाटी में है। इसे भारतीय सेना ने 1982 में बनाया था।

भारतीय सेना के पास एक घुड़सवार रेजिमेंट है और सबसे गर्व की बात यह है कि दुनिया में इस तरह की अब तक सिर्फ 3 रेजीमेंट ही हैं जिसमें से एक भारत के पास है ।

भारतीय नौसेना अकादमी जो कि केरल में स्थित है एशिया की सबसे बड़ी नौसेना अकादमी है।

सेना ना सिर्फ हमारी सीमाओं के प्रहरी का किरदार निभाती है बल्कि आंतरिक समस्याओं में भी सहायक सिद्ध होती है। बाढ़ आ जाए, आतंकियों से लड़ना हो, पुल टूट जाए ,चुनाव कराने हों, तीर्थ यात्राओं की सुरक्षा भी सेना के हवाले हैं। इन सब के अलावा भारतीय सेना के जवानों ने संयुक्त राष्ट्र के देशों जैसे लेबनान, कांगो, अल साल्वाडोर, सूडान श्रीलंका ,वियतनाम इत्यादि देशों में भी शांति बहाल रखने के लिए वीरता और सूझबूझ से कार्य किया है

इस सेना दिवस यह हम सब का कर्तव्य है कि हम सब यह कोशिश करें कि देश भक्ति सिर्फ एक तारीख की रिवायत न रहे बल्कि साल भर हमारे कार्यों में देश भक्ति झलकती रहे।

जहाँ हम और तुम हिन्दू-मुसलमान के फर्क में मर रहे हैं,
कुछ लोग हम दोनों के खातिर सरहद की बर्फ में मरे रहे हैं...
आइए मजहब का फर्क मिटाकर ऐसे भारतीय बनें जिस पर भारतीय सेना भी गर्व कर सके।

मोमबत्ती की ऊष्मा वहां तक क्यों नहीं पहुंचती?

पंकज चतुर्वेदी
स्वतंत्र पत्रकार

बीते एक सप्ताह में आगरा और उत्तरांचल में दो लड़कियों को सरेराह आग लगा कर जिंदा जलाया गया। शायद ही कोई दिन ऐसा बीत रहा हो जब देश के किसी हिस्से में मासूम बच्चियों के साथ दुष्कर्म की खबरें ना आ रही हों। छह साल पहले के दिल्ली में निर्भया कांड के बाद उभरा जनाक्रोश अब वोट व सत्ता की सियासत का दाना बन चुका है। जाहिर है कि उसके बाद बने कानून, जनाक्रोश या स्वयं की अनैतिकता पर ना तो अपराधियों को डर रह गया है ना ही आम समाज में संवेदना और ना ही पुलिस।

इन दिनों दो कांड संवेदनशील लोगों के बीच विमर्श में हैं, कुछ जगह प्रदर्शन व विरोध भी हो रहे हैं। आगरा से कोई बीस किलोमीटर दूर नौमील गांव की 15 साल की बच्ची संजली को 18 दिसंबर को दोपहर के 1.30 बजे स्कूल से घर लौटते समय दो लड़कों ने पेट्रोल डाल कर माचिस दिखा दी। लड़कों ने पहचान छुपाने के लिए हेलमेट पहन रखा था। हमला भी पीछे से किया था। संजली के पिता हरेंद्र सिंह जूते के कारखाने में काम करते हैं। उन्होंने बताया कि, 'जलाने के बाद उसे हाईवे के किनारे खाई में फेंक दिया गया। हमें नहीं मालूम उसे मारने की कोशिश किसने की होगी। हमारी किसी से कोई दुश्मनी नहीं है। दिल्ली में एक अस्पताल में बच्ची की मौत हो गई। ठीक उसी दौरान उत्तराखंड के पौड़ी जिले के कफोलस्यूं पट्टी के एक गांव की 18 वर्षीय लड़की बीएससी की प्रयोगात्मक परीक्षा देकर स्कूटी से घर लौट रही थी। रास्ते में गहड़ गांव के मनोज सिंह उर्फ बंटी उसका पीछा करने लगा। कुछ देर बाद एक सुनसान जगह में कच्चे रास्ते पर उसने लड़की को रोक लिया और जबरदस्ती करने की कोशिश करने लगा। जिस पर लड़की ने उसका विरोध करना शुरू कर दिया। छात्रा का विरोध से गुस्साए युवक ने छात्रा पर पेट्रोल छिड़क कर आग लगा दी और वहां से फरार हो गया। कुछ देर बाद जब वहां से गुजर रहे एक ग्रामीण ने जली हुई छात्रा को देखा तो इसकी सूचना पुलिस को इससे पहले अपराधी लड़की की मां को फोन पर बता देता है कि उसने लड़की को आग लगा दी है, दम हो तो बचा लो। विडंबना है कि, रौंगटे खड़े करने वाली इन घटनाओं पर दिल्ली मौन है। जाहिर है कि महिलाओं पर अत्याचार के खिलाफ बातें महज नारे, लफ्फाजी और अपना हित साधने के जरिये हैं।

देश में भूचाल ला देने वाले दिसंबर-2012 के दामिनी कांड में एक आरोपी ने तो जेल में आत्महत्या कर ली और बाकी मुजरिम अभी भी अदालतों की प्रक्रिया में अपनी फांसी से दूर हैं। उस कांड के बाद बने पास्को कानून में जम कर मुकदमे कायम हो रहे हैं। दामिनी कांड के दौरान हुए आंदोलन की ऊष्मा में सरकारें बदल गईं। उस कांड के बाद हुए हंगामे के बाद भी इस तरह की घटनाएं सतत् होना यह इंगित करता है कि बगैर सोच बदले, केवल कानून से कुछ होने से रहा, तभी देश के कई हिस्सों में ऐसा कुछ घटित होता रहा जो इंगित करता है कि महिलाओं के साथ अत्याचार के विरोध में यदा-कदा प्रज्जवलित होने वाली मोमबत्तियां केवल उन्हीं लोगों को झकझोर पा रही हैं जो पहले से काफी कुछ संवदेनशील हैं-समाज का वह वर्ग जिसे इस समस्या को समझना चाहिए -अपने पुराने रंग में ही है - इसमें आम लोग हैं, पुलिस भी है और समूचा तंत्र भी।

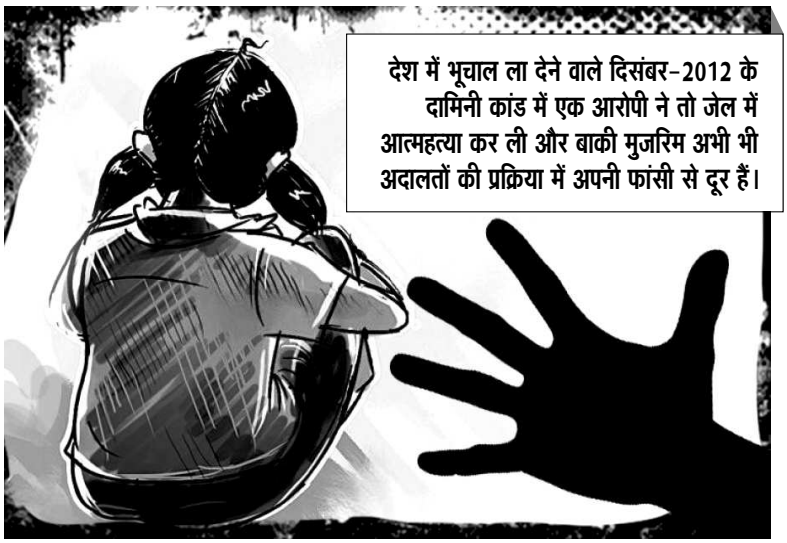

देश में भूचाल ला देने वाले दिसंबर-2012 के दामिनी कांड में एक आरोपी ने तो जेल में आत्महत्या कर ली और बाकी मुजरिम अभी भी अदालतों की प्रक्रिया में अपनी फांसी से दूर हैं।

दिल्ली में दामिनी की घटना के बाद हुए देशभर के धरना-प्रदर्शनों में शायद करोड़ों मोमबत्तियां जल कर धुंआ हो गई हों लेकिन समाज के बड़े वर्ग पर दिलो-दिमाग पर औरत के साथ हुए दुर्व्यवहार को ले कर जमी भ्रांतियों की कालिख दूर नहीं हो पा रही है। ग्रामीण समाज में आज भी औरत पर काबू रखना, उसे अपने इशारे पर नचाना, बदला लेने-अपना आतंक बरकरार रखने के तरीके आदि में औरत के शरीर को रोंदना एक अपराध नहीं बल्कि मर्दानगी से जोड़ कर ही देखा जाता है। केवल कुंठा दूर करने या दिमागी परेशानियों से ग्रस्त पुरुष का औरत के शरीर पर बलात हमला महज महिला की अस्मत या इज्जत से जोड़ कर देखा जाता है। यह भाव अभी भी हम लोगों में पैदा नहीं कर पा रहे हैं कि बलात्कार करने वाला मर्द भी अपनी इज्जत ही गंवा रहा है। हालांकि जान कर आश्चर्य होगा कि चाहे दिल्ली की 45 हजार कैदियों वाली तिहाड़ जेल हो या फिर दूरस्थ अंचल की 200 बंदियों वाली जेल; बलात्कार के आरोप में आए कैदी की, पहले से बंद कैदियों द्वारा दोयम दर्जे का माना जाता है और उसकी पिटाई या टॉयलेट सफाई या जमीन पर सोने को विवश करने जैसे स्वघोषित नियम लागू हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जेल जिसे असामाजिक लोगों की बस्ती कहा जाता है, जब वहां बलात्कारी को दोयम माना जाता है तो बिरादरी-पंचायतें- पुलिस इस तरह की धारणा क्यों विकसित नहीं कर पा रही हैं। खाप, जाति बिरादरियां, पंचायतें जिनका गठन कभी समाज के सुचारू संचालन के इरादे से किया गया था अब समानांतर सत्ता या न्याय का अड्डा बन रही हैं तो इसके पीछे वोट बैंक की सियासत होना सर्वमान्य तथ्य है। शायद हम भूल गए होंगे कि हरियाणा में जिन बच्चियों को उनके साहस के लिए (बस में छेड़छाड़ करने वालों की बैल्ट से पिटाई करने वाली बहनें) सम्मानित करने की घोषणा स्वयं मुख्यमंत्री कर चुके थे, बाद में खाप के दवाब में उन्हीं लड़कियों के खिलाफ जांच के आदेश दे दिए गए।

ऐसा नहीं है कि समय-समय पर बलात्कार या शोषण के मामले चर्चा में नहीं आते हैं और समाजसेवी संस्थाएं इस पर काम नहीं करती हैं। तीन दशक पहले भटेरी गांव की साथिन भंवरी देवी को बाल विवाह के खिलाफ माहौल बनाने की सजा सवर्णों द्वारा बलात्कार के रूप में दी गई थीं उस मामले को कई जन संगठन सुप्रीम कोर्ट तक ले गए थे और उसे न्याय दिलवाया था। लेकिन जान कर आश्चर्य होगा कि वह न्याय अभी भी अधूरा है। हाई कोर्ट से उस पर अंतिम फैसला नहीं आ पाया है। इस बीच भंवरी देवी भी साठ साल की हो रही हैं व दो मुजरिमों की मौत हो चुकी है। ऐसा कुछ तो है ही जिसके चलते लोग इन आंदालनों, विमर्शों, तात्कालिक सरकारी सक्रिताओं को भुला कर गुनाह करने में हिचकिचाते नहीं हैं। आंकड़े गवाह हैं कि आजादी के बाद से बलात्कार के दर्ज मामलों में से छह फीसदी में भी सजा नहीं हुई। जो मामले दर्ज नहीं नहीं हुए वे ना जाने कितने होंगे।

फांसी की मांग, नपुंसक बनाने का शोर, सरकार को झुकाने का जोर; सब कुछ अपने-अपने जगह लाजिमी हैं लेकिन जब तक बलात्कार को केवल औरतों की समस्या समझ कर उस पर विचार किया जाएगा, जब तक औररत को समाज की समूची ईकाई ना मान कर उसके विमर्श पर नीतियां बनाई जाएंगी; परिणाम अधूरे ही रहेंगे। फिर जब तक सार्वजनिक रूप से मां-बहन की गाली बकना, धूम्रपान की ही तरह प्रतिबंधित करने जैसे आधारभूत कदम नहीं उठाए जाते, अपने अहम की तुष्टि के लिए औरत के शरीर का विमर्श सहज मानने की मानवीय वृत्ति पर अंकुश नहीं लगाया जा सकेगा। भले ही जस्टिस वर्मा कमेटी सुझाव दे दे, महिला हेल्प लाईन शुरू हो जाए- एक तरफ से कानून और दूसरी ओर से समाज के नजरिये में बदलाव की कोशिश एक साथ किए बगैर असामनता, कुंठा, असंतुष्टि वाले समाज से ''रंगा-बिल्ला'' या ''राम सिंह-मुकेश'' या शिवकुमार यादव की पैदाईश को रोका नहीं जा सकेगा। मोमबत्तियों की उष्मा असल में उन लोगों के जमीर को पिघलने के लिए होना चाहिए जिनके लिए औरत उपभोग की वस्तु है, ना कि सियासती उठापटक के लिए।

सबसे पहले है कर्त्तव्य

राजेश सोनी

21 वर्ष के सेवाकाल में राजेश सोनी को उत्तम सेवा पदक व जी ब्रेवरी अवॉर्ड सहित मिले 125 से ज्यादा पुरस्कार व सम्मान

स्टाफ ऑफिसर, पुलिस कमिश्नर (जयपुर)

खुशी मिलती है...

विभिन्न जगह पदस्थापन के दौरान कई बार हत्या, लूट, डकैती आदि गम्भीर अपराधों सम्बन्धी अनसुलझे मामले सामने आते हैं। ऐसी घटनाओं को एक चुनौती के रूप में लेकर टीम बनाकर दिन रात उनको सुलझाने में लगना होता है और जब वह गुत्थी खुल जाती है, तब सफलता का जो एहसास होता है, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। ऐसे अनेक मौके आए जब गंभीर से गंभीर घटनाओं को भी सुलझाने में सफलता प्राप्त हुई।

कहते हैं ना होनहार बिरवान के होत चीकने पात, राजेश सोनी का जन्म 22 जनवरी 1975 सुन्नेल टप्पा (भवानीमंडी, झालावाड़) में हुआ, अध्यापक पिता की तीसरी संतान राजेश बचपन से ही हँसमुख, कुशाग्र बुद्धि ,स्वाम्बलन, निर्भीक, अनुशासित और समाजोउन्मुख सेवाभावी थे। बालावस्था में जहाँ उनके साथी खेल में मस्त थे वही राजेश जीवन की लक्ष्य निर्धारित कर चुके थे नन्हीं आखों में बड़े सपने और दिल में जोश लिए अच्छे नम्बरों से 10 वीं पास करते ही इन्होंने घर छोड़ कस्बे की उच्च माध्यमिक स्कूल में विज्ञान संकाय में दाखिला लिया।

पिता पर आर्थिक बोझ ना आये इसके लिए स्वाध्याय के साथ राजेश ने पार्ट टाइम जॉब और छोटे बच्चों ट्यूशन भी पढ़ाया।

झालावाड़ से बी.एस.सी की डिग्री ली और भारतीय जीवन बीमा में चयन हुआ पर राजेश का यहाँ मन नहीं लगा और एम.एस.सी व प्रतियोगिता परीक्षाओं परीक्षाओं की तैयारियों के लिये जयपुर आ गये।

एम.एस.सी करने के साथ ही राजेश के बचपन का सपना पूरा हुआ और पहले ही प्रयास में वर्ष 1997 में राजस्थान पुलिस सेवा में उप निरीक्षक के रूप में चयन हुआ और बारां जिले के मोठपुर थानाधिकारी के रूप में पहली पोस्टिंग हुई। 21 वर्ष के सेवा काल में अब तक 17 से अधिक थानों में थानाधिकारी रहते हुये राजेश ने सेवा, परोपकार और अदम्य साहस के कई आयाम स्थापित किये।

पुलिस के पास जब कोई फरयादी आता तो मन मे हजार शंकाएं साथ लाता है कि उसकी सुनवायी होगी कि नहीं पर राजेश ने बताया कि वे थाने पर आने वाले हर फरियादी की बात बड़ी सहजता से सुनते हैं और न्यायसंगत उचित कार्रवाई कर उन्हें बड़ा सुकून मिलता हैं।

बारां, बूंदी, कोटा व जयपुर में प्रभावी सेवा दे चुके राजेश सोनी अभी जयपुर पुलिस कमिश्नर के स्टाफ ऑफिसर पद पर हैं। 21 वर्ष के सेवाकाल में अब तक राजेश सोनी को उत्तम सेवा पदक व जी ब्रेवरी अवॉर्ड सहित 125 से ज्यादा से पुरस्कार व सम्मान मिल चुके हैं। तैराकी के शौक के साथ टीम वर्क में विश्वास रखने वाले राजेश सोनी पुलिस महकमे में रणनीतिकार, हार्ड कोड ब्लाइंड मर्डर, डकैती, अपहरण जैसे मामलों को त्वरित सुलझाने के लिए जाने जाते हैं।

प्रमुख उपलब्धि

सोनी कोटा के पुलिस थाना कुन्हाड़ी में बतौर एस.एच.ओ पदस्थापन के दौरान केशोरायपाटन रोड पर महिला आश्रम में रात्रि में डकैती व दोहरे हत्याकांड की घटना भीषणतम घटना हुई। जिसमें रात्रि के समय बदमाशों द्वारा महिला आश्रम पर धावा बोलकर एक महिला व एक पुरुष की हत्या कर दी एवं छः महिलाओ को घायल कर दिया एवं नगदी जेवर आदि चुरा कर ले गए डकैती की इस बड़ी घटना के महज 21 दिन में दतिया मध्य प्रदेश से मदारी गिरोह के सदस्यों को गिरफ्तार कर, माल बरामद करने में सफलता प्राप्त करी जिसमें सभी अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा भी हो चुकी है। यह एक प्रमुख उपलब्धि है।

युवाओं के नाम संदेश

युवाओं के नाम यह संदेश है कि, हम जहां भी जिस भी स्थिति में है वहां अपनी जिम्मेदारी एवं कर्तव्यों को समझ कर, उन्हें पूरा करने का, हर समय प्रयास करना चाहिए। हम अपने परिवार, समाज और देश के प्रति क्या कर सकते हैं, इसका विचार कर हमें कुछ ना कुछ योगदान आवश्यक रूप से करना चाहिए।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नन्दन ने राजेश सोनी से रेपिड फायर राउंड में पूछा फर्ज या समझौता...

राजेश ने एक आवाज में कहा फर्ज और उनकी आँखें चमक उठी, राजेश ने बताया कि 2014 में वे कुन्हाड़ी (कोटा शहर) एस.एच.ओ थे तब खुफिया सूत्रों से खबर मिली कि आदतन कुख्यात इनामी अपराधी जिस पर मर्डर और डकैती के कई केस चल रहे हैं अपनी फरारी उनके क्षेत्र में काट रहा है, राजेश ने स्पेशल टीम का गठन कर कई दिनों तक उसकी हरकतों और लोकेशन पर नजर रखी और कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए दबिश दी खुख्यात अपराधी को उसकी गैंग समेत पकड़ लिया लेकिन उसी वक्त गेंग के दूसरे साथियों ने फायरिंग शुरू कर दी जिसमें एक गोली राजेश की जांघ को भेदती हुई आरपार हो गयी पर दृढ़ निश्चयी और साहसी राजेश ने घायल अवस्था में भी जवाबी कार्यवाही करते हुए पूरी गेंग को पकड़ उनकी बड़ी वारदात की कोशिश को नाकाम कर दिया।

जयपुर में विश्व का सबसे बड़ा फिल्मिस्तान

जयपुर। देश दुनिया की सैकड़ों फिल्मों को मंच प्रदान करने वाला जयपुर इन्टरनेशनल फिल्म फेस्टिवल-जिफ अपनी यात्रा के दस साल पूरे कर चुका है। इस साल जिफ का 11वां एडिशन और भी ग्रांड होने जा रहा है। जिफ भारत में सबसे ज्यादा फीचर फिक्शन और शॉर्ट फिक्सन फिल्में स्क्रीन करने का रिकार्ड ही नहीं तोड़ेगा बल्कि इस बार दुनिया का सबसे बड़ा कॉम्पीटिटिव फिल्म फेस्टिवल भी बनने जा रहा है। जिफ 2019 में कुल 64 देशों की 227 फिल्में कॉम्पीटिशन की श्रेणी में है। इनमें 41 फीचर फिक्शन फिल्में और 129 शॉर्ट फिक्सन फिल्में शामिल हैं। दुनिया भर के किसी भी फेस्टिवल में ये अब तक का सबसे बड़ा कॉम्पीटीटिव सलेक्शन है। इससे पहले 2013 में जिफ में 217 फिल्में थी।

इस ग्रांड आयोजन के दो फायदे हैं एक तो ज्यादा से ज्यादा फिल्म मेकर्स और बेहतर फिल्मों को एक बड़ा मंच मिल रहा है। दूसरा वर्तमान में डिजिटल फिल्म मेकिंग से फिल्म मेकर्स की तादाद बढ़ी है, समारोह फेस्टिवल के फाउंडर हनु रोज के 5 साल के दिवंगत पुत्र आर्यन रोज को समर्पित होगा। समारोह जनवरी 18-22 तक जयपुर में आयोजित होगा। 22 जनवरी को गोलछा सिनेमा में आयोजित जिफ की क्लोजिंग सेरेमनी में की जाएगी।

पापा की खुशबू लौट कर आयी

नवीन जैन (IAS)
आयुक्त, श्रम एवं
नियोजन विभाग

अभी कुछ दिनों पहले दो ऐसी छोटी-छोटी या ये कहूँ कि देखने में छोटी-छोटी मगर मेरे लिए जैसे ''अनोखी'' बातें हुईं। हमारी श्रीगंगानगर की उत्साही टीम ने गर्भ में बेटियों को बचाने के अपने पुनीत अभियान के तहत पंजाब में एक कार्यवाही की। ये अब कोई नई बात तो नहीं रही है पर आज भी हर दूसरे राज्य की कार्यवाही की बात सुनकर मन जोश से आनंदित होता ही है। तो इस कार्यवाही को उन्होंने बखूबी पूरा किया। ज्यादा हैरानी तब हुई, जब टीम ने कहा कि फिरोजपुर जिले में जीरा पुलिस स्टेशन के अन्तर्गत कोई मक्खू नाम की जगह है। मक्खू उन्होंने रिपीट किया था- ये सोच के -कि इतने बडे विशाल देश में मक्खू नाम के गांव को कोई क्या जानता होगा? जिस मदद की मेरी टीम को दरकार थी, मैंने वह बात कर ली। पर अब मुद्दा ये निकला कि ''मक्खू'' जगह में ऐसा क्या विशेष था?

नौकरी के साथ जिम्मेदारी भी निभाते

तो दोस्तों, आपको बता दूँ कि मेरे पूज्य एवं प्रिय पिताजी का इस जगह से बहुत लम्बा एवं गहरा रिश्ता रहा है। मक्खू नाम तो जैसे हम परिवार वालों मतलब मेरी मम्मी, भाई -हाँ उन दिनों में हम सबके दिल, दिमाग, आत्मा में बहुत ही आम बोलचाल वाली डिक्शनरी में रचा बसा रहा करता था। यहाँ इस गाँव के पास ही मेरे पापा के सगे मामाओं की

एक चावल मिल हुआ करती थी, जिसमें मेरे पापा ने अपने काम की जिन्दगी यानि रोजी-रोटी की नौकरी शुरू की थी। पापा अपनी इस जिम्मेदारी के बीच में घर आते थे और उनकी शादी, हम दोनों भाईयों का जन्म, मेरी बुआ की विदाई, चाची का आगमन-सब घटनाओं के समय उनकी नौकरी चल रही थी-वो पंजाब मेल या फिरोजपुर बाम्बे एक्सप्रेस से सफर कर फिरोजपुर स्टेशन से नरवाना जंक्शन आना-जाना करते थे- वीकली, 15 दिन में या वीक में दो बार भी। चूंकि मिल पापा के मामा की ही थी तो इसका मतलब ये नहीं था कि वे कोई लिबर्टी ज्यादा ले सकें। पापा के उस जॉब के अनुभवों के बारे में कभी बैठकर तसल्ली से बात तो नहीं हुई। बस कुछ धुँधली सी इका -दुक्का बातें ही जहन में आती हैं।

चेहरे पर देखना चाहते थे रेस्पांस

पापा कहते थे-तुम्हें पता है कि हम लोग बिल्कुल पाकिस्तान बॉर्डर पर बैठे हैं। ये सुनकर आंखें फैलने लगती और दिमाग के सिनेमा में सैनिकों से घिरी किसी चौकी का चलचित्र घूमने लगता। मिडल क्लास में पैदा होने वाले बच्चे बहुत थोड़े गौरव से कनेक्ट होकर भी काफी स्पेशल फील कर लेते हैं। कभी बताते थे कि बहुत भीड़ होती है ट्रेन में और नतीजन उन्हें पूरा रास्ता भी खड़े होकर काटना पड़ता है। इस उम्मीद के मुताबिक दिमाग का बाईस्कोप थ्री-डी फॉर्मेट में तुरन्त भीड़ में घिरे एक मिडल क्लास के इंसान की फोटो खींच लेता था जिसका हाथ ट्रेन में किसी सहारे को मजबूती से वैसे ही पकडकर खड़ा है जितनी मजबूती से परिवार की मजबूत मजबूरियां उसके कंधों पर बंधी हैं। कितने ही मिडल क्लास नौजवान, नई शादी, छोटे बच्चों, बहनों की जिम्मेदारी के बोझ के साथ अप-डाउन कर उन सबकी जिंदगी के सफर को थोडा कम्फर्ट में ले लाने की लगातार कोशिश में अधेड़ हो जाते हैं। फिल्मी हीरो वाले फेण्टेसी करेक्टर जैसे उनके लिए है ही नहीं। इनकी कहानियां कभी-कभी दीप्ति नवल, ओम पुरी, स्मिता पाटिल, फारूख शेख पर्दे पर लाते थे तो एक नई ताजगी का एहसास होता था। पापा किसी फिल्म के हीरो तो नहीं थे, पर हम सबके अघोषित नायक थे। बचपन में हम अपने दोस्तों को स्कूल में गर्व से बताते थे कि मेरे पापा तो पाकिस्तान बॉर्डर पर काम करते हैं और मानो तो सेना के जवान को मिलने वाली वाहवाही जैसा रिस्पांस उस दोस्त के चेहरे पर देखना चाहते थे।

खालिस्तान आंदोलन

तभी खालिस्तान आंदोलन या कहूँ कि पंजाब में आतंकवाद का एक बुरा दौर शुरू हुआ। यह बुरा समय का और हमारे गर्व की अनुभूति अचानक आहिस्ता-आहिस्ता मेरी मम्मी के चेहरे पर चिंता की लकीरों में बदलने लगी।

अखबारों में छपता -सडक, बस गाँवों, बाजार में अचानक गोलीबारी की घटना होने लगी थी और हम लोगों को भी गट-फीलिंग होने लगी-पापा को खतरा है। ये अंदाजा उस समय नहीं था कि खतरा आंतकवादियों से कम था पर एक मिडल क्लास इंसान की चलती नौकरी के चले जाने से ज्यादा था। खैर हमने नोटिस किया कि कभी कभी मम्मी पापा को आग्रह करती या समझाने लगती कि अब पंजाब में रहना रिस्की है। क्या वों यहीं नरवाना में कोई बिजनेस नहीं कर सकते ? मुझे लगता है कि हाउस वाईफ को जब अपने दिये आईडिया पर ज्यादा विश्वास नहीं होता है तो प्रश्न नकारात्मक रूप से प्रश्नात्मक पूछा जाता है। मुझे बिल्कुल याद नहीं पडता कि पापा किस प्रकार की उधेड़बुन में रहे होंगे। हम लोग दोनों भाई 8-9 साल की उम्र में उन बच्चों की तरह थे जो हलचल को नोट तो करते हैं पर विश्लेषण करने की ग्रंथि उन दिनों में पूरी तरह डेवलप नहीं होती थी। ऐसा इसलिए लगता है कि तकनीक की पैनी घुसपैठ ने आज कल के छोटे बच्चों को काफी निपुण बना दिया है तो वे मुझे हमारे समय से इन मामलों में थोड़ा आगे लगते हैं। भावनात्मक पहलू समझ कर मम्मी पापा की उलझनों पर खुद भी परेशानी महसूस करते होंगे कि नहीं-शायद हम सबके अलग-अलग मत हों। बहरहाल पापा ने मक्खू वाली नौकरी छोड़ दी और नरवाना अनाज मण्डी में एक दुकान शुरू कर काम का श्रीगणेश कर दिया। कोई आर्थिक तंगी कभी महसूस नहीं हुई तो यही कह सकता हूं कि ये शिफ्टिंग आर्थिक रूप से परिवार के लिए ज्यादा बड़ी समस्या नहीं रही होगी। वहीं स्कूल य वहीं दुमंजिला घर या वैसा ही खाना या वैसा ही सामाजिक व्यवहार-क्या ये सब बहुत साधारण परन्तु मिडल क्लास की स्टेबिलिटी को नापने के अचूक पैरामीटर्स नहीं होते हैं ?

जब मौका मिले लम्हों को सहेज लें

जो भी है- एक छोटा सा गाँव - एक छोटा सा शब्द - ''मक्खू'' - कितनी यादों, लम्हों को दिलो दिमाग में ताजा कर गया। उन दिनों मिडल क्लास की कैमरे तक पहुँच आसान नहीं थी और जब हमारी पहुँच हुई तो कभी उन माँ-बाप को कैप्चर ही नहीं किया। आज कैमरा तो है - महंगा लेंस भी है, मेमोरी भी अनंत हो गई है पर वो नहीं रहे, जिन्हें सहेजना था। अब दूसरी घटना तो अगली पोस्ट में ही लिख पाउँगा। तब तक यही ज्ञान दूँगा कि ऐसे लम्हों को जब मौका मिले, कहीं सहेज लें।

पुनः अश्रुपूरित श्रद्धांजलि .....पापा.....

जहां भी हो खुश रहना -अब रिलेक्स करना बहुत काम किया। **(क्रमशः)**

मेरी रसोई

आपने रायता तो कई तरह का खाया होगा।
आइए आज हम आपको सिखाते हैं

बेसन की टुकड़ी वाला रायता

सामग्री

बेसन की टुकड़ी के लिए

एक कटोरी बेसन, नमक स्वादानुसार, तेल, जीरा एक छोटी चम्मच, हल्दी एक छोटी चम्मच, हरा धनिया बारीक कटा हुआ, हरी मिर्च स्वादानुसार बारीक कटी हुई।

रायते के लिए मथा हुआ दही

तड़के के लिए मीठी नीम, जीरा हींग और तेल।

विधि

दही को अच्छे से मथ कर नमक मिलाकर रख दें। बेसन को एक बाउल में डालें हल्दी, नमक, जीरा, बेसन में मिलाएं और पानी डालकर बेसन का घोल बना लें। बेसन का यह घोल पकोड़ों के घोल से थोड़ा पतला होना चाहिए। फिर कड़ाही गैस पर रखें और 4 टेबलस्पून तेल कड़ाही में डालकर गर्म करें। तेल के गर्म होने पर हींग डालें फिर बेसन का तैयार किया हुआ घोल डाल दें। घोल को चलाते रहें जब तक कि बेसन पककर गाढ़ा ना हो जाए और कड़ाही के किनारे ना छोड़ने लगे। एक थाली पर हल्का सा तेल लगाएं और हल्का गर्म बेसन तेल लगी हुई थाली पर कटोरी के तले की सहायता से फैला दें। जब यह घोल ठंडा हो कर जम जाए तो इसके छोटी-छोटी टुकड़ियां काट लें। यह बेसन की टुकड़ियां मथे हुए दही में मिलाएं। रायते का स्वाद बढ़ाने के लिए जीरा हरी मिर्ची, मीठी नीम और हींग का तड़का लगाएं। आपका स्वादिष्ट बेसन की टुकड़ी वाला रायता तैयार है।

सरोज दुबे
जबलपुर, मध्य प्रदेश

अनमोल होता है बचपन

ताना एस. पाटील
शोध छात्रा
मेंगलोर यूनिवर्सिटी

बचपन एक ऐसा मधुर शब्द है, जिसे सुनते ही लगता है.. मानो शहद की मीठी बूंद जुबान पर रख ली हो। जिसकी कोमल कच्ची यादें जब दिल में उमड़ती है तो होठों पर मुस्कान सज जाती है। जब भी इन महकते हरियाले पन्नों को फुर्सत से बैठकर खोला और इन पर जमी धूल की परतों पर यादों की फुहारें डाली तो भीनी भीनी सुगंध की बयार ने मन को भावुक बना दिया।

वही तो बचपन है जो कंचे और मांझे की अंटियों को जेबों में भर कर सो जाए, जो पतंगों को बस्ते में छुपा कर लाए, जो मिट्टी को गीला कर उनसे लड्डू बनाए, जो पेड़ पर चढ़ जाने के बाद उतरने को चिल्लाए, जो अंदर से दरवाजा बंद कर बड़ों की परेशानी बन जाए... कुल मिलाकर बचपन यानी शरारत, शैतानी और मस्ती की खिलखिलाती पाठशाला।

मैं घर में सबसे छोटी थी, इसीलिए माता-पिता की लाड़ली थी। मैं जो चाहती थी वह सब मेरे माता-पिता मुझे दिला दिया करते थे, शायद इसी कारण मैं जिद्दी बन गई। 1 दिन की बात है जब मैं 9 साल की थी मेरे पिताजी को किसी काम से शहर आना पड़ा, वह जाते वक्त मुझे 10 रुपये दे गए और मां से भी मैंने 10 रुपये ले लिए और उन 20 रुपयों को इकट्ठा कर मैंने सहेलियों के साथ मिलकर बेर, इमली और चना खाने में खर्च कर दिया। खेतों में खेलकर और तालाब में डुबकी लगाकर जब मैं दोपहर 2-30 बजे घर आई तो मां ने मुझे बहुत डांटा... देख कपड़े कितने गंदे करके लाई है। फिर मां ने मुझे नहला कर अपने पास सुलाने की कोशिश की। मां तो सो गई लेकिन मैं नहीं, मां के सोने के बाद धीरे से दबे पांव घर से बाहर खेलने के लिए निकल गई।

मैं अपनी तीन चार सहेलियों के घर गई लेकिन मेरे साथ खेलने के लिए कोई भी राजी नहीं हुई। कोई अपनी मां का हाथ बंटा रही थी तो कोई अपनी मां के डर से मेरे साथ खेलने के लिए तैयार नहीं हुई। मैं उदास होकर अपने घर लौट आई तो मैंने देखा कि मेरी वजह से मेरी सहेली की मां मेरी मां से कह रही थी कि 'ताना घर में एक पल नहीं रुकती, आप लोगों का उस पर जरा भी ध्यान नहीं है। यह सब सुनकर मैं फिर से वहां से भाग गई। गांव में ऐसे ही घूम रही थी और भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि कोई तो मेरे साथ खेलने के लिए आए। ऐसे ही घूमते-घूमते मेरी नजर स्वामी जी की दुकान पर पड़ी, जहां एक बहुत सुंदर गुड़िया मुझे दिखाई दी। मैंने जाकर स्वामी जी से पूछा यह गुड़िया कितने की है...स्वामी जी ने कहा 15 रुपये की। मैंने उन्हें कहा यह गुड़िया किसी को मत देना मैं 5 मिनट में मां से पैसे लेकर आती हूं। जब घर आई तो देखा कि मेरी मां और घर में काम करने वाली एक औरत दोनों ज्वार साफ कर रहे थे मैं धीरे से अंदर गई मां के डर की वजह से मां से पैसे मांगने की हिम्मत नहीं कर पाई।

मेरी मां रसोई में बहुत जगह पैसे छुपा दिया करती थी जैसे चावल, चीनी, चना और दाल के डिब्बों में। रसोई घर में जाकर मैं स्टूल के ऊपर खड़े होकर पीतल के डब्बे को सरकाने लगी ताकि उसमें से पैसे निकालकर गुड़िया ले आऊं लेकिन तभी मैं स्टूल सहित उस डिब्बे को लेकर गिर पड़ी। गिरने की आवाज के कारण मां अंदर आई। मेरे सर पर डब्बा लगा था मां ने पहले मुझे उठाया और देखा कि कहीं चोट तो नहीं लगी लेकिन इसके बाद मां को गुस्सा आया और उन्होंने चूल्हे से लकड़ी उठा कर हाथ में ली और मुझे मारने के लिए दौड़ी लेकिन मैं तभी जल्दी से उठकर घर से बाहर दौड़ गई।

अब ऐसे ही घूमते-घूमते मैं गांव की दूसरी गली में पहुंच गई वहां एक लड़की और उसका छोटा भाई मिट्टी से कुछ सामान बनाकर खेल रहे थे। मैं उन दोनों के पास चली गई। मैंने उस लड़की से जब उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम अंबिका बताया और मैं उसे अपना नाम 'ताना' बता कर उन दोनों भाई बहनों के साथ खेलने लगी। उसने मुझे बताया कि उसके माता-पिता मेरे पिताजी के खेत में ही काम करते हैं। मैंने अंबिका के घर की दहलीज पर 20 रुपयों का नोट पड़ा देखा और मेरी आंखें एकदम चमक उठी। मैंने वह 20 रुपये उठाए और दौड़ कर स्वामी जी की दुकान से 15 रुपये की वह गुड़िया खरीद ली और 5 रुपये की लेमन गोली और चावल का पापड़। और जब मैं घर के पास आई तब मैंने देखा कि वह लड़की अंबिका बाहर बैठ कर रो रही थी। वह रोते हुए बोली मेरे 20 रुपये दे दो, मेरी मां ने वह पैसे मुझे आटा पीस कर लाने के लिए दिए थे। अगर मैं गेहूं और ज्वार पिसवा कर नहीं लाई तो मां मुझे मारेगी और यह कहकर वह जोर-जोर से रोने लगी तब मैं डर गई कि अगर अंबिका ने

मेरी मां को यह सब बता दिया तो मेरी मां भी मेरी खूब पिटाई करेगी। मैंने अंबिका से कहा कि वह रोए नहीं...मैं उसे उसके पैसे उसी के घर दे जाऊंगी पर मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उसके पैसे उसे कैसे लौटाऊं। मेरे पास अब बस एक ही उपाय बचा था भगवान के घर के सामने रखा गुल्लक। मैंने जाकर वह गुल्लक फोड़ दिया सारे पैसे जमीन पर बिखर गए। उसमें से मैंने 5 रुपये वाले चार सिक्के उठाए और मां की चिल्लाने की आवाज सुनकर... कि फिर से क्या तोड़ दिया तूने... मैं वहां से भागती भागती अंबिका के घर गई। शाम के 7:00 बजे थे उसकी मां अभी तक घर नहीं आई थी मैंने उसे वो पैसे दिए और उससे कहा वह मेरी मां को कुछ भी ना बताएं मैं कल मेरे पिताजी की शहर से लाई हुई मिठाई खिलाऊंगी यह कहकर मैं अपने घर की तरफ चली गई। मां का गुस्सा अभी तक कम नहीं हुआ था मां चिल्ला रही थी कन्नड़ में आने दो ताना को उसके पिताजी को सब बताऊंगी कि वह चोरी भी करने लगी है। इसकी सभी इच्छाएं पूरी करने के बावजूद भी अब यह चोरी करती है आने दो इसे दोनों पैर तोड़ दूंगी कभी घर से बाहर जाने जैसी हालत नहीं रहेगी। यह सब सुनकर मेरी हिम्मत ही नहीं हुई कि मैं घर के अंदर जाऊं। हमारे घर के पीछे एक बड़ी सी जगह थी वहां हमारे गाय, बैल और भैंस बांधे जाते थे। मैं वहां घाट के ऊपर जाकर लेट गई और एक कपड़े को चादर की तरह ओढ़ लिया। और उधर घर में सभी मुझे ढूंढने में लगे हुए थे और सभी परेशान हो रहे थे कि मैं कहां चली गई। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब सो गई। सुबह 6:00 बजे जब हमारे खेत में काम करने वाले आदमी वहां आए तब उन्होंने मुझे वहां देख कर मेरे पिताजी को मेरी सूचना दी मुझे वहां पाकर मेरे पिताजी बहुत खुश हुए और उन्होंने मुझे गोद में उठा लिया पर मुझे बहुत तेज बुखार था।

पुस्तक समीक्षा

जीवन के उथल-पुथल पर मार्मिक संदेशों को काव्य-विधा के माध्यम से प्रस्तुत करने में माहिर , प्रीति जैन 'परवीन' के प्रथम काव्य संग्रह 'स्वप्नरंजिता' जीवन के दो पक्षों को एक साथ लेकर परिचित नये पुराने शब्दों से गुँथी माला पहनाती सी प्रतीत होती है। काव्य रचनाओं का गुलदस्ता 'स्वपनरन्जिता' , जीवन का गहरा अर्थबोध लिए है। कुछ काव्य रचनाओं में पुरुष प्रधान तत्व द्रष्टि गत हैं वहीं इनकी कई काव्य रचनाओं में स्त्री की बोध गम्मयता प्रभावशील है। शब्दों की अर्थ सम्प्रेषणीयता में इस संग्रह के आकार प्रकार जीवन से जुड़े सांगोपांग चितराम जैसे हैं।

वैसे तो प्रीति की कविताएं अधिकांशत: सौंदर्य और प्रकृति की छाप लिए होती है परन्तु काव्य संग्रह 'स्वप्नरन्जिता' की कविताएं जीवन के मनोभावों को उभारने में पूर्णत: सफल हुई है वही तो इसकी विशेषता है। समय सन्दर्भों की बारीक पड़ताल का दूसरा रूप 'स्वप्नरंजिता' ही है।

इनकी कविताओं से गुजरते जब बात रागात्मक भावों की आती है तो अनायास ही मन में एक गहरी उत्सुकता जागती सी प्रतीत होती है जो मानवीय रिश्तों को एक नया ही रूप हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

प्रीति की कविताओं में रंग बदलते इंसान पर व्यंग भी झलकता है तो दूसरी ओर वैचारिक परिपक्वता भी दृष्टिगोचर होती है। इनकी कुछ कविताएं दिल की बेचैनियों को अपने में समाये है तो दूसरी ओर जीवन में सुन्दर और सार्थक सन्देश देती सी भी प्रतीत होती है। इंसानी रिश्तों की टिप्पणियों के साथ ही रूमानी रूहानी कविताओं को वे एक नयी जुबान देती हैं।।

कविता वह एक स्वर है जो मुश्किल समय में कविता को जीवन की परिभाषा में ढालते हुए अपनी ताकत का अहसास कराता है।

इस संग्रह में रिश्तों के जिस खूबसूरती से समर्पित भावों को उजागर किया गया है वह बहुत ही कम देखने को मिलता है। जीवन के मंथन से भावों के मक्खन को कविता में सँजोना हर किसी के बस की बात नहीं होती। प्रीति जी सांस्कृतिक सरोकारों की कवित्री हैं तभी तो संगीत के स्वर भी कुछ कविताओं में झलकते देखे जा सकते हैं। इसमें मन नदी के विषाद के स्वर भी शहनाई की मंगल ध्वनि में परिवर्तित होते आप महसूस कर सकते हैं।

इनकी बेहद खूबसूरत कविताओं में , सुनो स्वप्न रंजिता ,रजनीगन्धा , तुम ही तो हो , ह्रदय मरुस्थल , एक मौन हूँ मैं , अनमोल लम्हें , लम्हों की कसक , बिन तुम्हारे , दिल की बात , कलम की स्याही और घुटता बचपन विशेष उल्लेखनीय है। स्वप्न रंजिता आकर्षक रंगरूप लिए है ..यह पुस्तक जीवन जीने की तीव्र चाह का बेजोड़ नमूना है।

डॉ. जितेन्द्र प्रसाद माथुर
अग्रवाल फार्म, मानसरोवर

गतांक से आगे....

उड़ती चील का अण्डा

''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

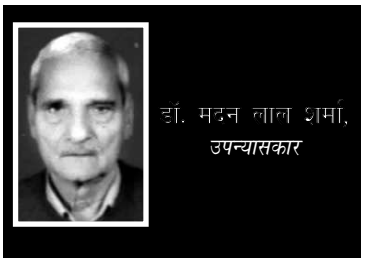

डॉ. मदन लाल शर्मा,
उपन्यासकार

उस समय हुक्के को सात्त्विक उपकरण माना जाता था। तम्बाकू लाट मिलाकर कूट-कूटकर बनाया जाता था। हुक्के के अन्दर पानी भरा जाता था, जिससे जो धुंआ घूंट के साथ 'नै' से बाहर आता था, वह पानी के स्पर्श से ठंडा और मीठा हो जाता था। उसमें पानी के ठंडक और लाट की मिठास मिली रहती थी। तम्बाकू की खुश्क कड़वाहट नहीं रहती थी। लोग भिन्न-भिन्न किस्मों का तम्बाकू अपने खेतों में उगाते थे। उसकी पौध लगाई जाती थी। यह एक ऐसी उपयोगी फसलें थी जिसे खारे पानी में भी उगाया जा सकता था। तभी जहाँ कुओं क पानी खारा होता था, वहां लोग तम्बाकू उगाते थे। तभी जहां कुंओं का पानी खारा होता था, वहां लोग तम्बाकू उगाते थे। कहीं-कहीं तो तम्बाकू के पेड़ के तने में सुंगध के लिए लोंग भी भर देते थे। यह एक नकदी फसल थी। मूल्य अच्छा मिल जाता था। इसलिए किसान इसकी खेती में रुचि लेता था। सरकार की ओर से तम्बाकू की खेती पर टैक्स भी लगता था, फिर भी किसान इसकी खेती बड़े पैमाने पर करते थे।

नाते-रिश्तेदारों, ब्याह-बारात, मेलों-ठेलों, तीज-त्यौहारों पर हुक्के की खातिर ही सबसे बड़ी मानी जाती थी। कहते हैं कि किसी गांव में बारात गई थी। लड़की वालों ने बारात की खूब खातिर की थी; परन्तु हुक्का-तमाखू का कोई प्रबन्ध नहीं किया था। इस पर लड़के वाला बिना भांवरों के बारात को वापिस लेकर चलने लगा था। जब रहस्य का पता लगा तो लड़की वालों ने फिर हुक्कों का प्रबंध किया और तब शादी हुई थी।

हुक्की और पानी जातीय गौरव की निशानी माने जाते थे। जब कोई व्यक्ति जातीय मर्यादा के विरुद्ध कार्य करता था, तो सबसे पहले उसका हुक्का-पानी ही बंद किया जाता था। यह कार्य उसका बिरादरी से बहिष्कार माना जाता था। हुक्का ब्राह्मणों में इसलिए भी ग्राह्य था, क्योंकि श्रीनाथद्वारा के मंदिर में रात्रि को पुजारी ठाकुर जी को ताजी करके हुक्का भरकर रखते थे; ताकि भगवान् भी हुक्का पान कर सकें।

...क्रमशः अगले अंक में

सुमधुर नवांकुर — माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

माही संदेश

प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/शायर से...

एजाज उल हक 'शिहाब'
जयपुर

एक इक पल में सुनो सैंकड़ों गम काटते हैं,
जिन्दगी कटती कहाँ है इसे हम काटते हैं।
मिल के रहते हैं वतन में सभी हमसाये मगर,
इस महब्बत को सियासत के उधम काटते हैं।
कोमी यकजहती से इस मुल्क का मुस्तक़बिल है,
मिल के हम आइये नफ़रत के अलम काटते हैं।
आलमे हिज्र में हैं वस्ल की यादों के चिराग,
इन्हीं यादों से तेरे हिज्र का ग़म काटते हैं।
हम ने जो की थी वफ़ा वो ही वफ़ा जुर्म हुई,
देखिए उसकी सजा कितने जनम काटते हैं।
पाक रक्खा है तखय्यूल को इबादत की तरह,
इतनी जिद्दत से तभी शेर का ज़म काटते हैं।
उम्र गुज़री है शिहाब अपनी जफ़ाओं के तईं,
दिल को रह रह के जफाओं के सितम काटते हैं।

जयपुर के युवाओं ने मिलकर बनाया एलबम 'इश्क की अर्जियां'

शास्त्रीय-कव्वाली-गजल की जुगलबंदी

जयपुर शहर के एक रेस्टोरेंट में इश्क की अर्जियां एल्बम लॉन्च किया गया। कार्यक्रम में एलबम की लॉन्चिंग से पहले पीयूष भाटिया और विजय जेसवानी ने लाइव परफॉर्मेंस दी। संगीतकार और गायक पीयूष भाटिया ने बताया कि इसके टाइटल सांग 'इश्क की अर्जियां' की खास बात है यह है कि पहली बार गजल, कव्वाली और शास्त्रीय संगीत को एक साथ गीत में पिरोया गया है। वहीं शहर के युवा गीतकार और सिनेमेटोग्राफर विशाल गुप्ता ने बताया कि इस गीत के फिल्मांकन का ज्यादातर हिस्सा एक साधारण स्मार्टफोन के जरिए शूट किया गया है। उन्होंने बताया कि इस पूरे गीत को कम बजट और कड़ी मेहनत से पूरा किया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि प्रवीण नाहटा जी रहे।

जैसलमेर के रहने वाले पीयूष भाटिया गत 15 वर्षों से संगीत के क्षेत्र से जुड़े हैं, और कई टैलेंट हंट कार्यक्रमों में भाग लेकर प्रसिद्धि पा चुके हैं। जयपुर की गायिका सुष्मिता झा, जो कि

राजस्थान यूनिवर्सिटी से गायन में स्वर्ण पदक विजेता हैं ने सहज ही इस एल्बम से जुड़ना स्वीकार किया। इस गीत में गायिका सोनू कंवर के गाए गए शास्त्रीय अलाप और सरगम इस एल्बम के टीजर द्वारा पहले ही लोकप्रियता पा चुके हैं। इस गीत में हीरो का किरदार निभाने वाले मॉडल दीपक शर्मा, पत्रकार होने के साथ साथ एक लेखक और कवि भी हैं। वहीं नायिका का किरदार निभाने वाली गीतांजलि चौहान, एक आर जे और मॉडल हैं। इस गीत के निर्देशन और फिल्मांकन का जिम्मा निभाने वाले विशाल गुप्ता, पेशे से एक हॉस्पिटल में पैरामेडिकल इंचार्ज हैं लेकिन, उनके कविता और कहानी लेखन के साथ-साथ फोटोग्राफी के हुनर ने इस गीत को फिल्माने की प्रेरणा दी।

रक्तदान शिविर का आयोजन

कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाईयों एवं एच.डी.एफ.सी. बैंक के संयुक्त तत्वावधान में हाल ही रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के आरम्भ में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सीमा अग्रवाल ने रक्तदान का महत्व बतलाते हुए जानकारी दी कि किस प्रकार एक युनिट रक्तदान से मरीजों का जीवन बचाया जा सकता है। साथ ही उप-प्राचार्या रन्जु मेहता व कार्यक्रम अधिकारी डॉ. नीतू माथुर, डॉ. टीना सिंह एवं डॉ. जयन्ती गोयल ने छात्राओं को अपने जीवन में अधिक से अधिक रक्तदान करने के लिए प्रोत्साहित किया। छात्राओं एवं महाविद्यालय कर्मचारियों ने मिलकर 65 युनिट रक्तदान किया। शिविर में छात्राओं के लिए स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था भी रखी गई थी जिसमें क्लोव डेंटल से दंत चिकित्सक एवं वीएलसीसी से आये न्यूट्रीशन एक्सपर्टस ने छात्राओं को परामर्श दिया। कैम्प में 100 से अधिक छात्राओं एवं महाविद्यालय के कर्मचारियों ने भाग लिया।

...बहुत कुछ हो जाना है

मुझे पेड़ों से प्यार करते हुए,
एक दिन पेड़ हो जाना है
मुझे नदी से प्यार करते हुए,
एक दिन नदी हो जाना है
मुझे चिड़िया से प्यार करते हुए,
एक दिन चिड़िया हो जाना है
और मनुष्य से प्यार करते हुए
एक दिन और मनुष्य हो जाना है
मुझे इस जीवन में अभी बहुत कुछ
हो जाना है...।

कल कहा था तुमने

आने के लिए कल
न आए तुम
आ गया कल
न कहना कल
आने के लिए कल
क्योंकि न आएगा
यह आने वाला कल।

महीन रिश्ते

जीरो से सौ तक रेंज होती है
रिश्तों की, प्यार की,
भेदभावों की।
इन सबमें नहीं होती
स्पष्ट रेखा कोई
इनमें होता है ओवरलेप-सा
एक से दो के बीच,
इसलिए तुम क्लेम नहीं कर पाते हो
असलियत को कभी-कभी नहीं,
बहुत बार।
जीवन गणित नहीं होता
एक और दो के बीच होते हैं
बहुत से धागों के रेशे
जिन्हें तुम पकड़ नहीं पाते हो
पर वो होते हैं...।

अनुपमा तिवाड़ी
जयपुर

सरहद पर चाँद

आज वो जा रहे हैं,
मेरी बोझिल आंखें ,
मायूस चेहरा ये बता रहे हैं,
आज वो जा रहे हैं।

इस दिल को कितना समझाएं
दस्तक दें आवाज़ लगाएं
आंखों तक जो कैद थे आंसू ,
दिल से गिरकर ये बता रहे हैं
आज वो जा रहे हैं।

कल तक जो सामान यहीं था
शेविंग किट, वो हरी वर्दी
उनकी बैल्ट बैरे और जर्सी
बंधे हुए सामान हैं सारे
मूक हैं फिर भी बता रहे हैं
आज वो जा रहे हैं।

सर्द हवाओं का आभास
नन्ही परियां हैं उदास
लुक्का-छिप्पी का खेल है पापा
जो छिपकर हमको सता रहे हैं।
आज वो जा रहे हैं।

पल-पल, दिन-दिन, फिर सप्ताह,
फिर महीनें सरक गए,
उम्र बिता दी सीमा पर
हम बाट जोहते तरस गए।

बतला दो ये खेल खत्म हो
साथ है हमें कब रहना?
जीवन के अविस्मित पल होंगे
विरह न होगा अब सहना।

अब तो छुट्टी भी मुश्किल है,
करवाचौथ अकेले ही करना।
जब अर्ध्य देना तुम चंदा को
तस्वीर मेरी संग रखना।

मेरे प्रिय प्राणेश्वर,
प्रहरी बन कर सीमा पर
जब याद कभी भी आएगी
तुम चांद देखना सरहद पर
ये आंखें नम हो जाएंगी

अमन शांति व प्रेम रहे
ये फासले हम को रुला रहे हैं
आज वो जा रहे हैं।

निधि नवीन के ध्यानी
देहरादून, उत्तराखंड

समझ आयेगा....

कुछ पीटेंगे माथा
कुछ खुशियां मनायेंगे
कुछ रोयेंगे जी भर
कुछ गीत गायेंगे
कुछ देंगे धन्यवाद
कुछ आरोप लगायेंगे
चलेगा दौर कुछ दिन
कुछ बातें बनायेंगे
जागे थे मतदाता
फिर से सो जायेंगे
पकड़े थे पैर जिनने
वो फिर पैर छुवायेंगे
चलता रहा वो ही
अब भी चलता रहेगा
हम जीते, वो हारे
ये भ्रम पलता रहेगा
जिस पर लुटाया था
तन मन जो तुमने
वो ही पांच साल ,
तुमको खलता रहेगा
रहेंगे अब भी पीछे
कार्यकर्ता देख लेना
चमचा हर मौसम
तेल मलता रहेगा
किसी की मेहनत पर
पानी फिर जायेगा
बहुतों को प्रजातंत्र
समझ आयेगा ...।

व्यग्र पाण्डे,
गंगापुर सिटी (राज.)

माही संदेश
सामाजिक सरोकार

समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं

समाज सेवा के लिए समर्थ लोग आगे आएं

एक कदम बढ़ेगा तो बढ़ेगा हिंदुस्तान

शहीद परिवार को आर्थिक सहयोग करें

किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई के लिए सहयोग करें

इन सर्दियों में गर्म कपड़े दान करें नए नहीं तो अपने पुराने सही, किसी के लिए वही नए से कम नहीं

व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर गरीब बच्चों को पढ़ाकर आएं

सम्पर्क :
संपादक, माही संदेश, मो.
9887409303
email-
mahisandesheditor@yahoo.com

माही संदेश प्रतिनिधि

जोधपुर प्रतिनिधि
शुभम पांडे*

बीकानेर प्रतिनिधि
दीप्ति पाठक *

असम प्रतिनिधि
रेखा मोरदानी*

गुजरात प्रतिनिधि
चिराग कुमार *

कला संदेश

युवा कलाकारों के लिए प्रेरणा हैं दीपाली शर्मा

कलाकार को जीवन में सबसे प्रिय कला ही होती है, आज माही संदेश पत्रिका के कला संदेश स्तंभ में आप मिलिए चित्र कलाकार दीपाली शर्मा से जो अपनी जीवंत कला के जरिए न केवल जीवन का सकारात्मक संदेश देती हैं बल्कि युवा कलाकारों के लिए प्रेरणा भी हैं।

दीपाली के पिता सुरेन्द्र कुमार शर्मा कहते हैं कि जब दीपाली का जन्म हुआ जो जन्म के समय से ही दीपाली सुनने व बोलने में थोड़ा असहज महसूस करती थी, जब यह चुनौती सामने आई तो जीवन की जिजीविषा के सामने कला के प्रति बचपन से ही समर्पण भाव ने इस कमजोरी को कभी प्रभावी नहीं होने दिया, वर्ष 2008 में दीपाली का उपचार कराने के बाद दीपाली ने स्कूल व कॉलेज की शिक्षा अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण की। दीपाली ने आई.आई.एस यूनिवर्सिटी से मास्टर ऑफ विज्युअल आर्ट में स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण की।

दीपाली के बचपन के दिनों की बात करते हुए पिता सुरेन्द्र कुमार शर्मा कहते हैं कि दीपाली के कला गुरु राम सिंह के सान्निध्य में कला सृजन का पहला पाठ पढ़ा, गुरु ने अपने सान्निध्य में दीपाली को तूलिका और रंगों के माध्यम से नव सृजन की आरंभिक शिक्षा प्रदान की। कला के प्रति समर्पित दीपाली प्रथम एकल प्रदर्शनी जवाहर कला केन्द्र में आयोजित की गई, इस एकल कला प्रदर्शनी में दीपाली की कुल 44 कलाकृतियां प्रदर्शित की, इन कलाकृतियों में दीपाली ने चारकोल व एक्रेलिक रंगों के प्रयोग के साथ-साथ ग्राफिक्स व डॉट-पेंटिंग का कलात्मक कार्य बखूबी किया है। इस कला प्रदर्शनी में मदर टेरेसा व नरेन्द्र मोदी के कला चित्र भी प्रदर्शित किए गए थे।

समय-समय विभिन्न कला प्रदर्शनियों में दीपाली की कला पदर्शित होती रहती है। दीपाली शर्मा ने अपनी कलाकार बहिन छवि शर्मा के साथ हाल ही राजस्थान के राज्यपाल कल्याण सिंह को उनका पोट्रेट भेंट किया, राज्यपाल ने दीपाली और छवि की कला की प्रशंसा के साथ-साथ उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

राज्यपाल कल्याण सिंह को पोट्रेट भेंट

जयपुर | दिव्यांग छात्राएं दीपाली शर्मा व छवि शर्मा ने राज्यपाल कल्याण सिंह को उनका पोट्रेट भेंट किया। राज्यपाल ने दोनों छात्राओं की कला की भूरि-भूरि प्रंशसा की, साथ ही उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद भी दिया।

जेआईपीएल की प्रथम वर्षगांठ पर आयोजित हुआ कार्यक्रम

सम्मानित हुए समाज सेवी

राहुल चौधरी,
संस्थापक, जेआईपीएल

जयपुर इंटरनेशनल पोएट्री लाइब्रेरी ने अपना 1 साल पूरा किया। जेआईपीएल ने अपना फाउंडर्स डे साइंस पार्क शास्त्री नगर में मनाया, जेआईपीएल के फाउंडर राहुल चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के अंतर्गत मोटिवेशनल स्पीकर प्रवीण नाहटा, उदय सिंह, अपूर्वा खांडल व राजस्थानी फिल्म निर्देशक व अभिनेता क्षितिज कुमार ने अपने विचार रखे। जन चेतना व समाज सेवा में आम जन की भागीदारी को बढ़ाने के लिए ईपीएच नामक एनजीओ ने सभी से मिलकर काम करने का आवहान किया। कार्यक्र म के दौरान प्रेरणा अवॉर्ड्स में सोशल वर्कर्स को उनके अनुकरणीय योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र एवं अवॉर्ड प्रदान किया गया। इसके साथ ही शहर के 80 से ज्यादा शायरों/कवियों ने अपना काव्य पाठ भी किया, कार्यक्रम का संचालन नोहेन सदफ और धनवंती ने किया।

जेआईपीएल के कोऑर्डिनेटर अनुराग सोनी ने अधिक जानकारी देते हुए बताया कि जेआईपीएल ने राजस्थान पैरा वॉलीबॉल की टीम को भविष्य में आयोजित होने वाले प्रतियोगिताओं के लिए स्पॉन्सर किया है,हाल ही कोयंबटूर में आयोजित किए गए अंतरराज्यीय महिला/पुरुष पैरा बॉलीबॉल प्रतियोगिता में जेआईपीएल की टीम ने कोच पप्पू सिंह के नेतृत्व में स्वर्ण प्रदक प्राप्त किया है।

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 3,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा: कनक विहार, हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

नक्श लायलपुरी नाम है उन शायर का जिन्हें भारतीय सिनेमा के इतिहास में बतौर उत्कृष्ट गीतकार हमेशा याद किया जाता रहेगा। पिछले करीब पांच दशकों से हिन्दी और पंजाबी सिनेमा के गीत-संगीत को अपनी लेखनी से समृद्ध करते आ रहे नक्श साहब मुम्बई के ओशिवरा क्षेत्र में स्थित अपने निवास स्थान पर 'बीते हुए दिन' के लिए खासतौर से समय निकाला और अपने निजी और व्यावसायिक जीवन के विषय में विस्तार से बातचीत की। प्रस्तुत है नक्श लायलपुरी साहब की कहानी, उन्हीं की जुबानीः

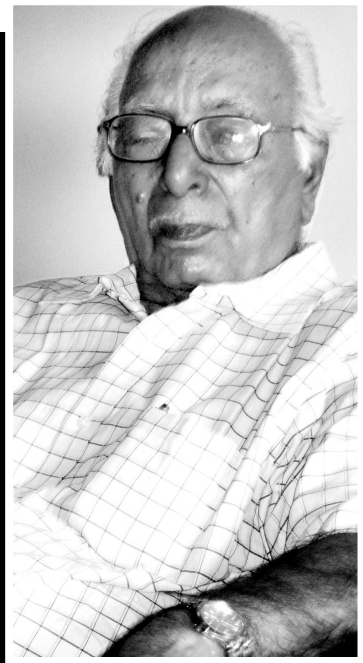

'मैं तो हर मोड़ पर तुझको दूंगा सदा'

नक्श लायलपुरी

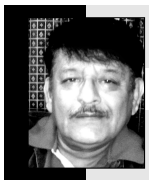

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार

मेरा जन्म 24 फरवरी 1928 को अविभाजित भारत के पश्चिमी पंजाब स्थित लायलपुर जिले के गांव चक नम्बर 118 में हुआ था। पिता पॉवर हाऊस में इंजीनियर थे। दस महीने का हुआ कि मेरी मां गुजर गयीं, जिसकी वजह से पिताजी को दूसरी शादी करनी पड़ी। चौथी तक की मेरी पढ़ाई गांव के ही प्राइमरी स्कूल में हुई। पिताजी का ट्रांसफर रावलपिण्डी हुआ तो पांचवीं से आठवीं तक की पढ़ाई मैंने रावलपिण्डी में की और फिर आगे की पढ़ाई के लिए लायलपुर शहर में हॉस्टल में दखिला ले लिया। यही वो दौर था जिसने मेरे जीवन को एक नयी दिशा दी थी। दरअसल हमारे उर्दू के मास्टर रामलालजी मेरी लिखाई और लेखन शैली से इतने प्रभावित थे कि साल के आखिर में मेरी कॉपियां अपने पास रख लेते थे ताकि बड़े छात्रों को दिखाकर उनके सामने उदाहरण रख सकें। उन्हीं की प्रेरणा से मेरा रुझान साहित्य की तरफ होने लगा था और मैं थोड़ा-बहुत लिखने भी लगा था। मास्टरजी का कहना था, अगर मैं विषय के रूप में साहित्य को चुनूं तो जीवन में काफी आगे जाऊंगा। लेकिन पिताजी चाहते थे कि मैं भी उन्हीं की तरह इंजीनियर बनूं, इसलिए उनके कहने पर मजबूरन मुझे विज्ञान के विषय चुनने पड़े, हालांकि रुचि न होने के कारण मैं कभी भी विज्ञान की कक्षा में नहीं गया। नतीजतन 12वीं तो पास कर ली लेकिन विज्ञान में मुझे बेहद कम नंबर मिले। पिताजी को मुझे इंजीनियर बनाने का सपना टूटता सा नजर आया तो वो मुझ पर बरस पड़े। उस रोज मैंने साफ शब्दों में उनसे कह दिया कि मेरी दिलचस्पी विज्ञान या इंजीनियरिंग में जरा भी नहीं है। इस बात पर और भी ज्यादा नाराज होकर उन्होंने मुझे आगे पढ़ाने से साफ इंकार कर दिया। उस वाकये ने भले ही मजबूरी में सही, लेकिन मुझे एक रास्ता जरूर सुझाया और मैं लाहौर जाकर वहां से छपने वाले, हीरो पब्लिकेशन के उर्दू दैनिक 'रंजीत निगारा' में नौकरी करने लगा। इस तरह से पत्रकारिता की मेरी शुरूआत हुई थी। लाहौर में लेखकों-शायरों की महफिलों में उठना-बैठना शुरू हुआ तो मैं भी उन्हें अपना लिखा सुनाने लगा। उन जहीन हस्तियों की सोहबत में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। लेकिन ये सिलसिला ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाया। उन्हीं दिनों मुल्क का बंटवारा हुआ और शरणार्थियों के काफिले के साथ हम लोगों को लखनऊ चले आना पड़ा, जहां पिताजी के एक दोस्त का बेटा नौकरी करता था। उन्होंने लखनऊ में जमने में पिताजी की बहुत मदद की। पिताजी ने लखनऊ में एक वर्कशॉप खोली लेकिन घर के माली हालात बद से बदतर होते चले गए। घर में माता-पिता और मेरे अलावा दो छोटी बहनें भी थीं। ऐसे में मुझ पर दबाव पड़ने लगा कि मैं भी कमाना शुरू करूं। बहुत कोशिशों के बाद भी कोई काम नहीं मिला तो परेशान होकर एक रोज मैंने बिना किसी को बताए चुपचाप घर छोड़ दिया। खाली हाथ और खाली जेब लिए बिना टिकट मैं मुम्बई जाने वाली ट्रेन में सवार हो गया। उस वक्त बस एक ही धुन सवार थी कि अपने पैरों पर खड़े होना है, लेकिन कैसे, ये मुझे मालूम नहीं था। ये 1949 की गर्मियों का वाकया है।

मुम्बई में मेरे एक पत्र-मित्र प्रदीप नैयर रहते थे जिनसे मैं कभी मिला नहीं था। दोपहर के एक बजे ट्रेन से दादर स्टेशन पर उतरा। प्रदीप के, रहमत मंजिल, दादर पूर्व के पते पर पहुंचा तो वहां ताला लटका मिला। पड़ोस की महिला ने बताया वो पूना गए हुए हैं और पन्द्रह दिनों बाद लौटेंगे। अब मैं भूखा-प्यासा, अजनबी शहर में अनजान लोगों के बीच पूरी तरह से सड़क पर था। सामने से चले आ रहे एक बुजुर्ग सरदारजी से मैंने पूछा आसपास कोई सराय होगी, तो उन्होंने विस्तार से मेरी बात सुनकर मुझे माटुंगा में सिटीलाईट सिनेमा के पीछे गुरूद्वारे का पता देते हुए कहा, वहां जाओ, आठ दिन रहने की जगह मिलेगी और साथ में दोनों वक्त का लंगर भी। पैदल घिसटता हुआ मैं करीब साढ़े चार बजे गुरूद्वारे पहुंचा तो लंगर खत्म हो चुका था। थका-हारा, वहीं फर्श पर लेट गया। पास ही में बिस्तर पर एक लड़का लेटा हुआ था। मेरी नजर उसके सिरहाने रखी उर्दू पत्रिका 'नकूश' पर पड़ी। पत्रिका के बहाने उनसे बातचीत शुरू हुई तो पता चला, उनका नाम कुलदीप सिंह है और वो भी लखनऊ के रहने वाले हैं। लखनऊ में लाटूश रोड पर उनकी मोटर-पार्ट्स की दुकान थी जिसकी खरीदारी के सिलसिले में वो मुम्बई आए थे। ये पता चलने पर कि मैं शायर हूं वो बहुत खुश हुए। उन्होंने मुझे साफ लूंगी और साबुन दिया, मैं नहा-धोकर गुसलखाने से बाहर निकला और फिर जो सोया तो नींद तभी खुली जब कुलदीप जी ने रात के लंगर के वक्त मुझे जबर्दस्ती उठाया।

...तो ये था इस अजनबी शहर में मेरा पहला दिन!

कुलदीप सिंह जी ने उन आठ दिनों में मेरी भरपूर मदद की। लखनऊ लौटने से पहले उन्होंने न सिर्फ गुरुद्वारे में मेरे ठहरने के इंतजाम को और एक हफ्ते के लिए बढ़वाया बल्कि जाते वक्त मुझे बीस रूपए भी दिए जो उस जमाने में

अच्छी-खासी रकम हुआ करती थी। उनके इस एहसान को मैं न तो कभी भूला हूं और न ही कभी भुला पाऊंगा। आगे चलकर भी हमारा सम्पर्क हमेशा बना रहा।

मुझे अगर कोई शौक था तो वो था पान खाने का, जिसने आगे चलकर मेरे लिए इस अजनबी शहर में एक अहम रास्ता खोला। दरअसल अपने शौक के चलते पान की दुकान पर मेरा आना-जाना लगा रहता था। उन दिनों गुरूद्वारे में मेरा रहने का वक्त खत्म होने वाला था। तभी एक रोज पान की दुकान पर अचानक मेरी मुलाकात लाहौर के रहने वाले एक दोस्त दीपक आशा से हुई जो लाहौर में बनी फिल्म 'पराए बस में' (1946) में खलनायक का किरदार निभा चुके थे। ये वो ही दीपक आशा थे जिन्होंने आगे चलकर धरम कुमार के नाम से घमण्ड (1955), रोड नं.303 (1960), संगदिल (1967) और मर्डर ऑन हाईवे (1970) जैसी फिल्मों का निर्देशन किया था। दीपक मुझे अपने घर ले गए और इस तरह इस शहर में कुछ वक्त के लिए मेरा रहने का इंतजाम भी हो गया। धीरे-धीरे दोस्ती का मेरा दायरा बढ़ने लगा। उन्हीं दिनों डाकतार विभाग में नौकरी मिली तो जिंदगी सुचारू रूप से चलने लगी। लेकिन साल भर के अंदर ही नौकरी से ऊब होने लगी तो इस्तीफा दे दिया। फिर हम कुछ दोस्तों ने मिलकर एक नाटक तैयार किया जिसमें मशहूर अभिनेता राममोहन भी एक रोल करने वाले थे, जो उन दिनों जगदीश सेठी के निर्देशन में बन रही फिल्म जग्गू में भी बतौर सहायक-निर्देशक काम कर रहे थे। मेरे लिखे नाटक और उसके गीतों से राममोहन इतने प्रभावित थे कि उन्होंने मुझे जगदीश सेठी जी से मिलवाया। फिल्म जग्गू में हंसराज बहल के संगीत निर्देशन में पहले से ही सात गीतकार ट्रायल पर काम कर रहे थे, जिनमें से भरत व्यास, वर्मा मलिक, असद भोपाली और ए. शाह शिकारपुरी के अलावा मुझे भी चुन लिया गया। उस फिल्म में मैंने एक कैबरे गीत लिखा था, 'मैं तेरी हूं तू मेरा है दिल लेता जा', जिसे कुलदीप कौर पर फिल्माया गया था। इस तरह साल 1952 में बनी फिल्म जग्गू से बतौर गीतकार मेरे करियर का श्रीगणेश हुआ।

उर्दू शायरी में चूंकि हमेशा से उपनाम के आगे शहर का नाम लगाने का चलन रहा है इसलिए मैं लाहौर में ही जसवंतराय शर्मा से 'नक्श लायलपुरी' हो चुका था। उधर, लखनऊ में घरवालों को भी पता चल चुका था कि मैं मुम्बई में हूं और हमारे बीच फिर से सम्पर्क स्थापित हो चुका था, लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि मैं फिल्मों में काम करने लगा हूं, उन्होंने मुझसे संबंध तोड़ दिए। उधर फिल्म जग्गू के रिलीज होने के बाद भी मेरा संघर्ष जारी रहा। उसी दौरान लखनऊ के एक दोस्त ने पत्र के जरिए अपनी बहन का रिश्ता मेरे लिए भेजा जिसके जवाब में मैंने उसे लिखा कि मैंने जिंदगी में हरेक काम अपने पैरों पर खड़ा होकर करने की कोशिश की है लेकिन शादी मैं अपने मां-बाप की मरजी से करूंगा। उसने मेरा पत्र मेरे पिताजी को दिखाया तो उन्हें बेहद खुशी हुई। पिताजी ने वो पत्र बेहद गर्व से अपने उन सभी दोस्तों को दिखाया जो कहते थे कि उनका बेटा उनके कहे में नहीं है। इस तरह साल 1953 में मेरी शादी हुई और घरवालों के साथ मेरे

संबंध सामान्य हो गए।

मेरी जिम्मेदारियां बढ़ रही थीं। संघर्ष बदस्तूर जारी था। दिन बेहद परेशानियों में गुजर रहे थे। मेरी उर्दू इतनी नफीस थी कि लोग मुझे पंजाबी मानने को तैयार ही नहीं होते थे। इसके बावजूद एक रोज सपन-जगमोहन ने मुझे एक सौ एक रूपए एडवांस देकर पंजाबी फिल्म में गीत लिखने को कहा। मैं ठहरा उर्दू का शायर, आत्मविश्वास था नहीं लेकिन पैसे की सख्त जरूरत के चलते रात भर जागकर सोलह गीतों के मुखड़े लिख डाले। पत्नी को हिदायत दी कि पैसा खर्च न करें, शायद वापस करने पड़ें। सुबह होते ही सपन-जगमोहन से मिला तो गीत सुनते ही वो उछल पड़े। वो फिल्म थी 1953 में बनी 'जीजाजी' जो इतनी जबर्दस्त हिट हुई कि मेरे सामने पंजाबी फिल्मों की लाईन लग गयी। 'जीजाजी' के बाद मैंने सपन-जगमोहन, हरबंस, एस.मदन, दत्ताराम, बी.एन.बाली, राज सोनी, सुरिंदर कोहली, हंसराज बहल, जगजीत कौर, वेद सेठी, बाबुल, हुस्नलाल-भगतराम, खैयाम, चित्रगुप्त, मोहिंदरजीत सिंह, मास्टर अल्लारक्खा और कुलदीप सिंह जैसे संगीतकारों के लिए 'एह धरती पंजाब दी', 'पौबारा', 'धरती वीरां दी', 'सत सालियां', 'लाईए तोड़ निभाईये', 'सतगुरू तेरी ओट', 'कुवांरा मामा', 'नीम हकीम', 'सपनी', 'जगवाला मेला', 'मां दी गोद', 'पटोला', 'तकरार', 'मढ़ी दा दीवा' और 'वतनां तौं दूर' जैसी करीब चालीस फिल्मों में गीत लिखे। मेरा आर्थिक संघर्ष तो कुछ हद तक खत्म हो चुका था लेकिन डर था कि कहीं पंजाबी फिल्मों का ही गीतकार बनकर न रह जाऊं। भले ही मैंने जग्गू जैसी सामाजिक फिल्म से अपने करियर की शुरूआत की थी लेकिन हिंदी फिल्मों के जो भी गिने-चुने प्रस्ताव मेरे पास आ रहे थे वो सभी सी-ग्रेड स्टंट फिल्मों के थे, जिन्हें मैं लगातार ठुकराता जा रहा था। ऐसे में एक रोज तंग आकर

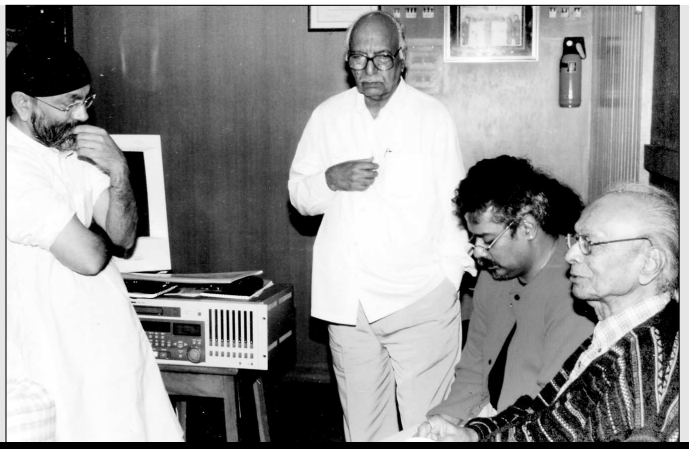

नक्श लायलपुरी साहब के कुछ मशहूर गीत (वीडियो)

1. **धानी चुनर मोरी हाए रे** http://youtu.be/p86bNXMmwJA
2. **मैं तो हर मोड़ पर तुझको दूंगा सदा** http://youtu.be/eHevQ9XGsCI
3. **कई सदियों से कई जन्मों से** http://youtu.be/Ss2Bh78sHB8
4. **उल्फत में जमाने की हर रस्म को ठुकराओ** http://youtu.be/bqWFvBSkl5E
5. **तुम्हें देखती हूं तो लगता है ऐसे** http://youtu.be/9imljtd9QAQ
6. **ये मुलाकात इक बहाना है** http://youtu.be/w2HJR_T2NFA
7. **कदर तूने ना जानी** http://youtu.be/-nIUXECWWEw
8. **चांदनी रात में एक बार तुझे देखा है** http://youtu.be/nD26-e5T0Rs
9. **चिट्ठिए** http://youtu.be/SvOznLuyw4Y
10. **तुम्हें हो न हो मुझको तो** http://youtu.be/oiuvzMiOw2g
11. **प्यार का दर्द है मीठा-मीठा प्यारा-प्यारा** http://youtu.be/yz0sYTgmxVA
12. **सीने में भी तूफां है** http://youtu.be/SaBGa4UipuUU

नक्श लायलपुरी साहब के कुछ मशहूर गीत (ऑडियो)

1. http://ww.smashits.com/naqsh-lyallpuri/songs/lyricist-8233-page-1.html
2. http://ww.smashits.com/naqsh-lyallpuri/songs/lyricist-8233-page-2.html
3. http://ww.smashits.com/naqsh-lyallpuri/songs/lyricist-8233-page-3.html
4. http://ww.smashits.com/naqsh-lyallpuri/songs/lyricist-8233-page-4.html
5. http://ww.smashits.com/naqsh-lyallpuri/songs/lyricist-8233-page-5.html
6. http://ww.smashits.com/naqsh-lyallpuri/songs/lyricist-8233-page-6.html
7. http://ww.smashits.com/naqsh-lyallpuri/songs/lyricist-8233-page-7.html

पत्नी ने मुझसे कहा, एक तो वो लोग होते हैं जिन्हें काम ही नहीं आता, दूसरे वो, जिन्हें काम तो आता है, लेकिन मिलता नहीं, और तीसरे आप जैसे जिन्हें काम आता भी है, मिलता भी है लेकिन आप करना ही नहीं चाहते। उनकी बात से मुझे झटका लगा और मैंने बगैर फिल्म का स्तर देखे, हिंदी फिल्मों में भी लिखना शुरू कर दिया। उस दौर में मैंने 'घमण्ड' (1955), 'राईफल गर्ल' (1958), 'सर्कस-क्वीन' (1959), 'चोरों की बारात' (1960), 'रोड नं. 303' (1960), 'ब्लैक शैडो' (1961), 'जिंबो फाईण्ड्स ए सन' (1966), 'नौजवान' (1966), 'संगदिल' (1967) और 'जालसाज' (1969) जैसी कई स्टंट फिल्मों में गुलशन सूफी, हरबंस, शफी एम. नागरी, मनोहर, सी.अर्जुन, सपन जगमोहन और जी.एस. कोहली जैसे संगीतकारों के साथ काम किया। इनमें से फिल्म 'चोरों की बारात' के निर्देशक मेरे वो ही पत्र-मित्र प्रदीप नैयर थे, जिनके दादर स्थित घर पर मुम्बई में मैं सबसे पहले पहुंचा था और जहां मुझे ताला लटका मिला था। इस फिल्म में कुल पांच गीतकारों में मेरे साथ फारूख, गाजी और साजन बिहारी के अलावा गुलजार दीनवी नाम के भी एक गीतकार थे जिन्हें आज गुलजार के नाम से जाना जाता है। फिल्म 'चोरों की बारात' के कुल छह गीतों में से मैंने एक गीत 'ले मार हाथ पे हाथ गोरिए कर ले पक्की बात' लिखा था तो गुलजार दीनवी का लिखा गीत था, 'ये दुनिया है ताश के पत्ते इसको करो सलाम'।

फिल्म 'रोड नं. 303' से संगीतकार सी. अर्जुन ने अपना करियर शुरू किया था तो 'राईफल गर्ल' और 'ब्लैक शैडो' जैसी फिल्मों के संगीतकार हरबंस को संगीतकार पण्डित अमरनाथ के बेटे के तौर पर कहीं ज्यादा जाना जाता था। हरबंस की तीन फिल्मों मैंने 'शाद' के नाम से गीत लिखे थे। उधर, पंजाबी फिल्मों का गीतकार होने की मेरी पहचान इतनी गहरी जड़ें जमाए हुए थी कि रवि के संगीत में साहिर लुधियानवी का लिखा फिल्म 'प्यार का बंधन' का गीत 'घोड़ा पिशौरी मेरा, तांगा लाहौरी मेरा' आकाशवाणी पर काफी वक्त तक सिर्फ इसलिए मेरे नाम से बजता रहा क्योंकि उसमें पंजाबी के अल्फाज की भरमार थी। और शायद इसी वजह से रोशन के संगीत में फिल्म मधु (1959) के मेरे लिखे गीत 'धानी चुनर मोरी हाए रे, जाने कहां उड़ी जाए रे' का श्रेय काफी समय तक शैलेन्द्र को मिलता रहा।

मैंने चालीस पंजाबी फिल्मों में करीब सौ तीन सौ गीत लिखे होंगे। साथ ही कैप्टन शेरू, सरफरोश, तेरी तलाश में, पुरानी पहचान, गुस्ताकी माफ, गुनाह और कानून जैसी हिंदी फिल्मों में भी गीत लिखता रहा। लेकिन मुझे सही पहचान मिली 1970 में आयी फिल्म चेतना से। इस फिल्म में मेरा लिखा और मुकेश का गाया गीत 'मैं तो हर मोड़ पर तुझको दूंगा सदा' आज भी उतने ही चाव से सुना जाता है। उसके बाद मुझे मदन मोहन, जयदेव, ख़ैयाम, रवींद्र जैन, नौशाद, शंकर जयकिशन सहित उस दौर के सभी नामी संगीतकारों के साथ काम करने का मौका मिला। 'रस्मे उल्फत को निभाएं कैसे' (दिल की राहें), 'कई सदियों से कई जन्मों से' (मिलाप), उल्फत में जमाने की हर रस्म को ठुकराओ' (कॉलगर्ल), 'तुम्हें देखती हूं तो लगता है ऐसे' (तुम्हारे लिए), 'ये मुलाकात इक बहाना है' (खानदान), 'माना तेरी नजर में तेरा प्यार हम नहीं' (आहिस्ता आहिस्ता), 'चांदनी रात में हर बार तुम्हें देखा है' (दिले नादान), 'तुम्हें हो न हो मुझको तो इतना यक़ीं है' (घरौंदा), 'कदर तूने ना जानी' (नूरी), 'न जाने क्या हुआ' और 'प्यार का दर्द है' (दर्द), 'चिट्ठिए' (हिना) और 'मुमताज तुझे देखा' (ताजमहल) जैसे मेरे लिखे कई गीत अपने दौर में बेहद मशहूर हुए।

टी.वी. सीरियलों का दौर आया तो मुझे कई सीरियलों के शीर्षक गीत लिखने का मौका भी मिला। इंतजार और सही, शिकवा, दरार, अधिकार, वारिस, कर्त्तव्य, अभिमान, मिलन, सुकन्या, अनकही, सवेरा, चुनौती, विरासत, आशियाना, बाजार, गृहदाह, श्रीकांत, मुजरिम हाजिर है, अमानत, कैम्पस, किटी पार्टी, दहलीज, मुल्क, ये इश्क नहीं आसान, सरहदें, विक्रम बेताल, सवेरा और बिखरी आस निखरी प्रीत जैसे दूरदर्शन और निजी चैनलों के कई सीरियलों के शीर्षक गीत मैंने लिखे।

साल 2006 में आयी फिल्म यात्रा में मैंने खैयाम के संगीत में एक गजल 'साज-ए-दिल नगमा-ए-जां' लिखी थी जिसे तलत अजीज ने गाया था। करीब 8 बरसों के बाद हाल ही में मैंने आने वाली फिल्म 'सबका साईंबाबा' के लिए एक भजन 'लागी रे लगन' लिखा, जिसे सुखविंदर सिंह ने गाया है और संगीतकार हैं आंचल तलसेरिया।

करीब साठ बरसों के करियर के दौरान मैंने तकरीबन सभी नामी-गिरामी संगीतकारों के साथ काम किया है। इस दौरान मैंने दो सौ से भी ज्यादा फिल्मों में करीब बारह सौ गीत लिखे होंगे। बीते 24 फरवरी को 86 साल का हो चुका हूं। मेरे परिवार में पत्नी और तीन बेटे हैं, बड़ा और छोटा बेटा निजी क्षेत्र की कम्पनियों में मैनेजर हैं। सिर्फ मंझले बेटे राजन लायलपुरी ने ही सिनेमा को व्यवसाय के तौर पर चुना है और वो सिनेमेटोग्राफर होने के साथ-साथ एक लेखक भी है। पंजाबी फिल्म 'वतनां तौं दूर' उन्हीं की कहानी पर बनी है।

आज भरे-पूरे परिवार में जिंदगी शांति से गुजर रही है। पीछे मुड़कर देखता हूं तो उतार-चढ़ाव से भरे अपने सफर को मंजिल पर पहुंचा देख मन को संतोष होता है और खासतौर से पत्नी के प्रति मन श्रद्धा से भर उठता है जिन्होंने हर अच्छे-बुरे वक्त में मेरा पूरा साथ दिया है। नक्श साहब का निधन 22 जनवरी, 2017 को 89 साल की उम्र में मुम्बई में हुआ।